भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

नव प्रभा

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालय की छमाही पत्रिका
अंक 18 (अक्टूबर 2024 से मार्च 2025)

हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form.

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना ।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

विषय-सूची

01	हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में हिंदी फिल्मों का योगदान – रेखा हेरेंजाल	01
02	भारतीय सिनेमा और हमारी हिंदी – नितेश तिवारी	04
03	कर्मचारियों की प्रतिभा...– मंगला रश्मि	06
04	हिंदी का प्रचार-प्रसार और मनोरंजन जगत – अनूप कुमार	07
05	हिंदी सिनेमा का वैश्विक प्रभाव – दीपक कुमार	08
06	भगवान कृष्ण और उनके मोर पंख की रोचक कथा – देविका डी पी	09
07	राजभाषा नीति के बारे में जानें	02, 22, 24, 29, 32, 33
08	सिनेमा जगत और हिंदी – देवांश सिंह	10
09	ये ज़िंदगी (कविता) – प्रदीप कौर	11
10	हिंदी की शक्ति बढ़ाता बॉलीवुड– संगेपल्लि सुरेंदर रेड्डी	12
11	प्रमुख प्रशासनिक शब्दावली जानें...	13
12	हिंदी और सिनेमा– दूरदर्शन से डिजिटल प्लेटफॉर्म तक– वैभव महाजन	14
13	फिल्मों से मेरा जुड़ाव – कोमला एल	16
14	हिंदी सिनेमा में संगीत– हिंदी भाषा सीखने का एक सशक्त साधन– स्नेहा गुप्ता	17
15	महत्वपूर्ण रक्षा-इलेक्ट्रॉनिकी शब्दावली जानें...	19
16	हिंदी सिनेमा – भाषा और संस्कृति का सशक्त प्रचारक– नीतिका सरीन	20
17	हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाता हिंदी फिल्मी गीत-संगीत – ऋतु लाम्बा	23
18	बारिश की बूँद (कविता)– संध्या पंत	25
19	हिंदी सिखाती मीडिया – अजय गुप्ता	26
20	दिल में सिनेमा (कविता) – आर पी सिंह	27
21	हिंदी के प्रसार में लेखकों और गीतकारों का योगदान– स्वाति गुप्ता	28
22	इंटरनेट, मीडिया और सिनेमा से बलखाती हिंदी – ज़ोया ख़ान	30
23	"निर्मल धारा नैतिकता की और" – कुम्मी शर्मा	33
24	आइए हिंदी माध्यम से कन्नड़ा सीखें	34
25	कंपनी गतिविधियां	36
26	राजभाषा गतिविधियां	38
27	अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन	41
28	क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन– बीईएल की प्रतिभागिता	43
29	नराकास गतिविधियां	44
30	नई पहल	45
31	वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाए	51
32	साहित्यकार परिचय	52

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

श्री मनोज जैन
सीएमडी, अध्यक्ष

श्री विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन), उपाध्यक्ष

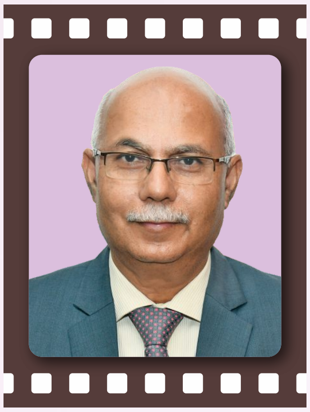

श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव
निदेशक (अन्य यूनिटें), विशेष आमंत्रिती

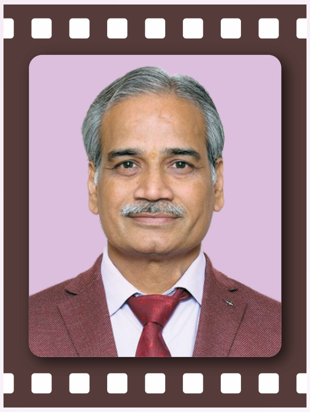

श्री दामोदर भट्टड़ एस
निदेशक (वित्त), विशेष आमंत्रिती

श्री सुरेश कुमार के वी
निदेशक (विपणन), विशेष आमंत्रिती

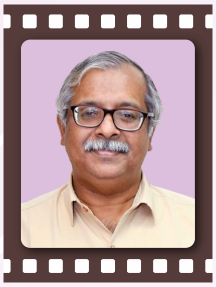

श्री हरिकुमार आर
महाप्रबंधक (टी.पी.), सदस्य

श्रीमती रमा एस
महाप्रबंधक (वित्त), सदस्य

श्रीमती नीति पंडित
महाप्रबंधक (एस.पी.), सदस्य

श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (एच.आर.), सदस्य

श्री प्रदीप कुमार सेठिया
महाप्रबंधक (आई.ए.), सदस्य

श्री केशव राजू एच एस
अपर महाप्रबंधक (सतर्कता)
सदस्य

श्री मनोज यादव
अपर महाप्रबंधक (एम.एस.)
सदस्य

श्री श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव
सदस्य

श्री हरिहरन ई ए
वरिष्ठ उमप्र (सी.सी.)
सदस्य

श्री नीरज कुमार चड्ढा
उप महाप्रबंधक (लाइसेंसिंग)
सदस्य

श्री श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
सदस्य सचिव

संदेश

श्री मनोज जैन
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

भारतीय संविधान में जिन भारतीय भाषाओं को शामिल किया गया है वे सभी समृद्ध और विकसित भाषाएं हैं। अपने–अपने क्षेत्रों में हमारी सभी भाषाओं के विकास के खुले अवसर हैं तथापि एक देश, एक संपर्क भाषा और केंद्र सरकार के लिए एक राजभाषा का होना हमारी राष्ट्रीय एकता और अस्मिता की पहचान है। आजादी मिलने के बाद भारत की संविधान सभा ने प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी की अध्यक्षता में 14 सितंबर, 1949 को कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और श्री गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को स्वीकार किया और हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। तदनंतर राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम और संकल्प लागू हुए और केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के अनेक उद्यम किए गए जो आज बदस्तूर जारी हैं। इन प्रयासों के कारण राजभाषा हिंदी ने बड़ी लंबी यात्रा तय की है।

संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व हम सभी जानते हैं। समय के साथ संपर्क भाषा के भी रूप–रंग बदले हैं। इसके कई कारक हैं। एक प्रमुख कारक मनोरंजन का सर्वाधिक प्रचलित साधन हिंदी फिल्में हैं। हिंदी फिल्में देश के हर कोने में देखी–दिखाई जाती हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कार्पोरेट छमाही हिंदी पत्रिका नवप्रभा का यह 18 वां अंक राजभाषा "हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान" रखा गया है।

पत्रिका को साकार करने वाली टीम के सभी सदस्यों को बधाई।

जयहिंद...

बीईएल की राजभाषा टीम

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

श्रीनिवास राव
18.11.2002 से राजभाषा में
मुख्यालय

डॉ गोपालकृष्ण एच एल
01.07.2009 से राजभाषा में
मछिलिपट्टणम

सुरेश कुमार वी
23.06.2010 से राजभाषा में
हैदराबाद

सेतुरत्नम एस
01.04.2012 से राजभाषा में
बेंगलूरु कॉम्प्लेक्स

माधुरी रावत
01.04.2015 से राजभाषा में
कोटद्वार

नवजोत पीटर
18.08.2015 से राजभाषा में
गाज़ियाबाद

श्यामलाल दास
21.12.2015 से राजभाषा में
चेन्नई

रजनी साव
15.03.2016 से राजभाषा में
सीआरएल–बेंगलूरु

डॉ रहिला राज के एम
21.03.2017 से राजभाषा में
मुख्यालय

डॉ उषा रावत
15.05.2019 से राजभाषा में
सीआरएल–गाज़ियाबाद

संदेश

श्री विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)

यह देखकर अच्छा लगता है कि पूरे देश में शासकीय कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। हिंदी अपेक्षाकृत अधिक सरल व आसानी से समझी और बोली जाती है। देश को एक सूत्र में बांधने में भाषा का योगदान बहुत अधिक होता है। अपनी इसी खूबी के कारण हिंदी ने आजादी से पहले यह काम बखूबी किया था।

हिंदी आज संपर्क भाषा, राजभाषा से आगे चलते हुए विश्व भाषा बनने को अग्रसर है। भाषा के इन तीनों रूपों में हिंदी सिनेमा और हिंदी साहित्य दोनों का उल्लेखनीय सहयोग रहा है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए नवप्रभा के इस अंक का विषय "हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान" रखा गया है। फिल्मों में लोगों की भाषा प्रतिबिंबित होती है। फिल्में देखकर लोग अपनी भाषा को सम्पन्न बनाने की चेष्टा करते है। इस तरह भाषा को सूक्ष्म, सुदृढ़, लचीले और परिणामकारी बनाने में फिल्मों का बड़ा योगदान होता है। हिंदी फिल्में देश के साथ–साथ विदेशों में भी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी हैं। इस प्रकार हिंदी सिनेमा ने देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी हिंदी को प्रोत्साहित किया है।

इस विशेष प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को मेरी शुभकामनाएं।

जय हिंद...

संदेश

चलचित्र यानी फिल्में मनोरंजन का माध्यम ही नहीं हैं बल्कि समाज के भीतर भाषा, संस्कृति और परंपराओं की भी प्रचारक हैं। भारतीय समाज में, जहां विभिन्न क्षेत्रीय भाषाएं बोली जाती हैं, हिंदी सिनेमा ने सेतु का काम किया है। फिल्में ऐसा शक्तिशाली माध्यम है जिससे समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है।

आज विकसित और विकासशील देशों में फिल्म उद्योग ने अपना कद इतना बढ़ा लिया है कि इससे देश की अर्थव्यवस्था भी बलशाली बन रही है। अपार संभावनाएं और रोजगार निर्मिति का क्षेत्र होने के कारण इसे उद्योग भी कहा जाता है। भारतीय सिने युग दादासाहब फालके जी के राजा हरिश्चंद्र (वर्ष 1913) से आरंभ होता है। तब से अब तक यानी एक सौ बारह वर्षों में भिन्न–भिन्न प्रकार की फिल्में बनी। दुनिया भारतीय सिने जगत् को सबसे ज्यादा फिल्में बनाने वाले उद्योग के रूप में देखती है। आज एक–एक फिल्म का सैकड़ों करोड़ों का कारोबार करते देखकर आंखें चौधिया जाती हैं। धार्मिक और पौराणिक कथाओं से शुरुआत करने वाला भारतीय सिनेमा बाजारवादी सिनेमा तक पहुंचते–पहुंचते कई करवटें ले चुका है। हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण इसकी भाषाई समरसता भी है। प्रासंगिक ही है कि नवप्रभा का यह अंक "हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान" पर आधारित है।

पत्रिका से जुड़े सभी लोगों को मेरा साधुवाद।

जय हिंद, जय हिंदी...

श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादकीय

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक–18
छमाही पत्रिका
(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्री मनोज जैन
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षण
श्री विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)

परामर्श
श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन
श्री श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. रहिला राज के.एम.
कनिष्ठ अनुवादक

श्री श्यामल नंदी
प्रशिक्षु अधिकारी (राजभाषा)

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

ज़माना बड़े शौक से सुन रहा था,
कैसे थकते दास्तां कहते कहते।

सदाबहार फिल्म चुपके–चुपके में एक बहुत मज़ेदार लेकिन महत्वपूर्ण संवाद है – "अरे बरखुरदार, तुम भाषा का मज़ाक नहीं कर रहे हो, एक आदमी का मज़ाक कर रहे हो, भाषा अपने आप में इतनी महान होती है कि उसका मज़ाक किया ही नहीं जा सकता।" बात पते की है और सौ फीसदी सही भी। कई बार फिल्मी संवाद इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे जनमानस में गहरी पैठ कर जाते हैं, पीढ़ियों तक...। शब्दों की ताकत कभी कम नहीं होती, वे कालजयी होते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि फलां शब्द कठिन है, असल में शब्द कठिन नहीं होते, परिचित या अपरिचित ज़रूर हो सकते हैं। भाषा में महारथ हासिल करने और इसकी सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए सिनेमा सशक्त माध्यम रहा है।

हिंदी फिल्म जगत ने हिंदी भाषा को न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान के रूप में स्थापित किया, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर भी ले गया। यह एक ऐसा माध्यम रहा है जिसने हिंदी को मनोरंजन के साथ–साथ भावनाओं, विचारों और एकता का प्रतीक बनाया। विदेशों में भी हिंदी सिनेमा का अच्छा खासा दर्शक वर्ग है। फिल्मों के वैश्विक प्रसार ने हिंदी भाषा के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्वेत–श्याम फिल्मों के प्रारंभिक दिनों से लेकर वैश्वीकृत सिनेमा के आधुनिक युग तक, बॉलीवुड ने हिंदी को न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में व्यापक रूप से बोली और समझी जाने वाली भाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा, फिल्में सामाजिक बुराईयों और अपराधों को सही ढंग से पहचानने में सहायक होती है यानी समाज सुधार में भी इनका महती योगदान रहा है।

हिंदी सिनेमा ने भाषा के मानकीकरण में भी अपनी तरह का योगदान दिया है। फिल्मों में अक्सर औपचारिक हिंदी और बोलचाल की अभिव्यक्तियों के मिश्रण का इस्तेमाल किया जाता है जो ज्यादातर दर्शकों को समझ में आते हैं। यह मिश्रण साहित्यिक हिंदी और बोली जाने वाली बोलियों के बीच के अंतर को पाटने में मदद करता है, इस प्रकार यह संपर्क भाषा को लोकप्रिय बनाता है।

संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को प्रचारित करने में हिंदी फिल्मों की इसी उल्लेखनीय भूमिका को ध्यान में रखकर हमारे नवप्रभा का यह अंक हिंदी सिनेमा को समर्पित किया गया है। आशा है, आपको पसंद आएगा।

जयहिंद...

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में हिंदी फिल्मों का योगदान

बॉलीवुड के नाम से जाने जा रहे हिंदी सिनेमा जगत ने हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बॉलीवुड फ़िल्में लगभग 100 से ज़्यादा देशों में देखी जाती हैं, जो दुनिया भर के अलग-अलग दर्शकों को हिंदी से परिचित कराती हैं। जिससे हिंदी की वैश्विक पहुँच बढ़ रही है । मनोरंजन के साथ-साथ हिंदी सिनेमा अनेक क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहा है, उसमें प्रमुख है, हिंदी सिनेमा द्वारा हो रहे हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार।

ऐसे कोई ही देशी या विदेशी चलचित्र प्रेमी होगा जो बॉलीवुड के अमिताभ बच्चन या शाहरुख खान को नहीं पहचानता होगा। भले ही उस विदेशी नागरिक को भारत के बारे में ज्यादा कुछ पता न हो, लेकिन उसको यह जरूर मालूम होगा कि ये दोनों हिंदी चित्र जगत के बादशाह हैं।

हिंदी भाषा को बढ़ाने में हिंदी सिनेमा का योगदान कुछ इस तरह है-

सांस्कृतिक आदान-प्रदान- हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में मदद की है, जिससे यह अन्य भाषियों के लिए ज़्यादा सुलभ और आकर्षक बन गई है। उदाहरण के लिए, हिंदीतर भाषी जो हिंदी सिनेमा देखता है, उसे उत्तर भारतीयों के करवा चौथ, होली, जैसे त्योहारों के बारे में जरूर पता रहेगा, वैसे ही वह दक्षिण के कंबळा, यक्षगान या पोंगल के बारे में हिंदी भाषा जाननेवालों को सिनेमा द्वारा परिचित हो चुका होगा। हिंदी फ़िल्में अक्सर सांस्कृतिक तत्वों, परंपराओं और मूल्यों को शामिल करती हैं, जिससे विभिन्न संस्कृतियों की समझ और प्रशंसा को बढ़ावा मिलता है।

भाषा मानकीकरण- बॉलीवुड हिंदी, जिसे "फ़िल्मी हिंदी" या "बॉलीवुड भाषा" के नाम से भी जाना जाता है, हिंदी, उर्दू और अन्य भाषाओं का एक अनूठा मिश्रण है। हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा को मानकीकृत करने, उच्चारण, शब्दावली और व्याकरण में एकरूपता को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। उत्तर भारत में हिंदी के कई स्वरूप है, जैसे, लखनवी, मैथिली, हरियाणवी, खड़ी बोली, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, पंजाबी और राजस्थानी सहित्य आदि लेकिन चलचित्रों नें इन सारे भाषा स्वरूपों को हमें परिचित करने के साथ साथ, सामान्य रूप से आसान होने के लिए हिंदी को मानकीकृत भी किया है।

भाषा सीखने को प्रेरित करना- बॉलीवुड फ़िल्में देखने या हिंदी गाने सुनने के बाद दुनिया भर के कई लोग हिंदी सीखने के लिए प्रेरित हुए हैं। हिंदीतर भाषी जिसने हिंदी के किसी प्रसिद्ध हिंदी सिनेमा के बारे में बहुत सुना है, वह ज़रूर उस सिनेमा को देखने की और भाषा समझने की कोशिश करेगा, जिससे परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से हिंदी को बढ़ावा मिलेगा।

संगीत द्वारा भाषा संरक्षण- हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने में मदद की है। भारत की कोई भी संगीत प्रेमी हिंदी फिल्मी गाने गातें हैं, जिससे हिंदी भाषा उन तक आसानी से पहुंच जाती है।

आर्थिक प्रभाव- बॉलीवुड फिल्मों में उद्योग का महत्वपूर्ण आर्थिक निहितार्थ है, राजस्व उत्पन्न करना और रोजगार के अवसर पैदा करना, जो बदले में हिंदी भाषा को बढ़ावा देता है। सृजनात्मक हिंदी भाषा प्रेमी को अगर हिंदी सिनेमा द्वारा उद्योग भी मिल रहा है, तो हिंदी की तरफ उसका प्रेम और बढ़ेगा और भाषा को बढ़ावा मिलेगा।

सॉफ्ट पावर- बॉलीवुड को भारत के एक सॉफ्ट पावर टूल के रूप में मान्यता दी गई है, हिंदी फ़िल्में द्वारा अत्यंत प्रभावी सम्प्रेषण वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा और संस्कृति की होती है। देश के प्रति अभिमान, भारत को एक जुट बनाना, भाषा का मानकीकरण, भारत को और हिंदी को विश्व स्तर पर परिचित करवाना बेशक हिंदी चलचित्रों द्वारा किए जा रहे कार्य है।

बॉलीवुड फ़िल्में जिन्होंने हिंदी भाषा की शिक्षा को बढ़ावा दिया

1. "हिंदी मीडियम" (2017) – इस फ़िल्म ने हिंदी भाषा की शिक्षा के महत्व और गैर–अंग्रेज़ी भाषियों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

2. "इंग्लिश विंग्लिश" (2012) – इस फ़िल्म में एक हिंदी भाषी गृहिणी के अंग्रेज़ी सीखने के संघर्ष को दिखाया गया है, जिसमें भाषा शिक्षण के महत्व पर ज़ोर दिया गया है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि हिंदी सिनेमा ने फ़िल्मों, संगीत, साहित्य और शिक्षा के माध्यम से वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में किस तरह योगदान दिया है।

<u>हिंदी चलचित्रों के संवाद</u> जो हिंदी और हिंदीतर भाषी खुशी खुशी दोहराते रहते हैं, ऐसे संवादों ने भी हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाया हैं–

1. "जानी!! जिनके घर शीशे के होतें हैं, वे दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकते" – "वक्त" फिल्म का यह लाइन तो हिंदी का एक मुहावरा बन चुका है ।

2. "ये हाथ मुझे दे दे ठाकुर!" "कितने आदमी थे'', "जो डर गया समझो वो मर गया" – फिल्म शोले के गब्बर सिंह की ये प्रसिद्ध लाइने घर–घर में, हंसी मज़ाक में आज भी बोली जाती है।

3. "मोगेम्बो खुश हुआ" मि.इंडिया या यह जाना–माना संवाद कई सालों बाद भी याद किया जाता है ।

4. "तारीख पे तारीख– तारीख पे तारीख", "यह ढाई किलो का हाथ जब उठता है ना, तो वो इनसान उठता नहीं!! उठ जाता है। – फिल्म दामिनी का यह संवाद सालों बाद भी याद किया जाता है।

5. "जा सिमरन जा! जी ले अपनी ज़िंदगी!!", "बड़े बड़े देशों में ऐसी छोटी–छोटी बात होती रहती हैं।"– दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे फिल्म की यह लाइन आज भी सामाजिक माध्यम / इंटरनेट में मीम बनकर आज भी प्रसिद्ध है।

6. एक चुटकी सिंदूर की कीमत तुम क्या जानो रमेश बाबू – ॐ शांति ॐ की यह लाइन सुप्रसिद्ध है

<u>हिंदी फिल्मी गाने–</u>

हिंदी फिल्मी गाने भारतीय संगीत के एक प्रमुख घटक हैं, जो शास्त्रीय और आधुनिक दोनों स्रोतों से अपनी प्रेरणा प्राप्त करते हैं। संगीत–गीत–नृत्य पहलू कथानक, संवाद और अन्य मापदंडों के समान शैली की एक अभिन्न विशेषता हिंदी फिल्मी गानों में है। हिंदी सिनेमा के गानों ने संगीत प्रेमियों के दिलो–दिमाग पर अपने लिए एक अलग ही जगह बना लिया है।

भारत में १902 में गौहर जान द्वारा रिकॉर्ड किया गया पहला गाना और पहली बॉलीवुड फिल्म आलम आरा (१931) सारेगामा के तहत बनाई गई थी, जो भारत की सबसे पुरानी संगीत कंपनी है, जिसका स्वामित्व वर्तमान में आरपी–संजीव गोयनका समूह के पास है, इससे लेकर आज कल के अत्याधुनिक गाने भी संगीत प्रेमी सुनाते हैं और भाषा को समझते हैं ।

भाषाई रूप से, बॉलीवुड के गानों में स्थानीय हिंदुस्तानी भाषा का उपयोग किया जाता है, जो हिंदी और उर्दू दोनों बोलने वालों के लिए पारस्परिक रूप से समझ में आता है, जबकि आधुनिक बॉलीवुड के गाने भी तेजी से हिंग्लिश के तत्वों को शामिल करते हैं। उर्दू शायरी का बॉलीवुड के गानों पर विशेष रूप से गहरा प्रभाव पड़ा है, जहाँ गीत उर्दू शायरी और ग़ज़ल परंपरा से काफी हद तक प्रभावित होते हैं। इसके अलावा, बॉलीवुड के गानों के लिए कभी–कभी पंजाबी का भी इस्तेमाल किया जाता है।

हिंदी सिनेमा ने कई तरह की फ़िल्में बनाई हैं जिन्हें आसानी से "ऐतिहासिक", "पौराणिक", "भक्ति", "काल्पनिक" आदि शैलियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, लेकिन हर फ़िल्म में गाने अंतर्निहित होते हैं। बॉलीवुड के गानों में भाषाओं का अलग–अलग इस्तेमाल जटिल हो सकता है। ज़्यादातर गानों में हिंदी और उर्दू के अलग–अलग रूप इस्तेमाल किए जाते हैं, कुछ गानों में फ़ारसी जैसी दूसरी भाषाएँ भी शामिल होती हैं और आधुनिक हिंदी फ़िल्मों के गानों में अंग्रेज़ी शब्दों का इस्तेमाल सुनना कोई असामान्य बात नहीं है।

भारतीय सिनेमा, अपने विशिष्ट फिल्म संगीत के साथ, न केवल पूरे भारतीय समाज में फैला है, बल्कि दुनिया भर में भारत की संस्कृति के प्रसार में भी सबसे आगे रहा है। ब्रिटेन में, हिंदी फिल्मी गाने रेस्तरां में और एशियाई संगीत को समर्पित रेडियो चैनलों पर सुने जाते हैं। ब्रिटिश नाटककार सुधा भूचर ने एक हिंदी फिल्म हिट हम आपके हैं कौन.! को एक हिट संगीतमय "Fourteen Songs" में बदल

दिया, जिसे ब्रिटिश दर्शकों ने खूब सराहा। फिल्म निर्माता बाज़ लुहरमन द्वारा निर्मित "मौलिन रूज" पर हिंदी सिनेमा के प्रभाव को स्वीकार किया, जिसमें अनु मलिक द्वारा रचित फिल्मी गीत "छम्मा छम्मा" पर आधारित एक गीत "Hindi Sad Diamonds" शामिल किया गया। ग्रीस में इंडोप्रेपी की शैली हिंदी फिल्म संगीत से उभरी, जबकि इंडोनेशिया में एलिया खादम, रोमा इरामा और मंसूर एस जैसे डंगडट गायकों ने इंडोनेशियाई दर्शकों के लिए हिंदी गीतों को फिर से तैयार किया है। फ्रांस में, बैंड लेस रीटा मित्सुको ने "ले पेटिट ट्रेन" के लिए अपने संगीत वीडियो में बॉलीवुड प्रभावों का इस्तेमाल किया और फ्रेंच गायक पास्कल ऑफ़ बॉलीवुड ने "ज़िंदगी एक सफ़र है सुहाना" जैसे गीतों को शामिल करके फ़िल्मी संगीत को लोकप्रिय बनाया। नाइजीरिया में बंदिरी संगीत – सूफ़ी गीतों और बॉलीवुड शैली के संगीत का संयोजन – हौसा युवाओं के बीच लोकप्रिय हो गया है। हिंदी फ़िल्म संगीत को कैरिबियन में स्थानीय शैलियों के साथ मिलाकर "चटनी संगीत" भी बनाया गया है।

डिस्को, बैंड, रॉक, कव्वाली, पॉप, भक्ति जैसे सारी शैलियों में हिंदी गीत मौजूद है जो गानों के साथ साथ हिंदी भाषा को भी लोकप्रिय बना रहें है । खुशी, ग़म, उत्साह, भगवान की पूजा से लेकर बारात और दुल्हन की बिदाई तक आज का जीवन हिंदी गानों से समेटे हूएं है जिसने हिंदी को बड़ी संख्या में कानों से लेकर जुबां तक पहुंचाया है ।

जिस तरह से आज विश्व भर में हिंदी भाषा परिचित है, बिना बॉलीवुड के फिल्में और गानों से ये शायद ही हो पाता। इस तरह से हिंदी फिल्म जगत ने अपने विभिन्न पहलुओं के जरिए हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

रेखा हेरेंजाल
कार्पोरेट सम्प्रेषण

क्या आप जानते हैं / Did you know?

केंद्र सरकार के हर कार्यालय (पीएसयू और बैंक सहित) में राभाकास (राजभाषा कार्यान्वयन समिति) गठित होना अनिवार्य है। कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख (वरिष्ठतम अधिकारी) इस समिति के अध्यक्ष होते हैं और सभी विभाग / प्रभाग प्रमुख इसके सदस्य होते हैं। कार्यालय का राजभाषा का कामकाज देखने वाले अधिकारी इसके सदस्य सचिव होते हैं। समिति की प्रत्येक तिमाही में एक बैठक यानी वर्ष में 04 बैठकें होनी अनिवार्य है।

It is mandatory to have OLIC (Official Language Implementation Committee) constituted in every Central Govt Office (incl. PSUs and Banks). Administrative Head (Sr. Most Officer) will be its Chairman and all Dept. / Divn Heads will be its members. Officer responsible to look after OL work of office will be its Member Secretary. 04 meetings in a year, i.e. one in each quarter are mandatory.

प्रत्येक तिमाही की राजभाषा तिमाही प्रगति रिपोर्ट तिमाही के समाप्त होने के बाद के महीने की 10 तारीख तक यूनिट/कार्यालय प्रमुख के हस्ताक्षर से कार्पोरेट कार्यालय को और एमआईएस के ज़रिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को भेजी जानी अनिवार्य है।

Quarterly Progress Report on OL duly signed by Unit/Office Head is required to be sent to CO through SAP and to Dept. of OL, MHA, New Delhi through MIS.

भारतीय सिनेमा और हमारी हिंदी

हिंदी फिल्म जगत, जिसे आमतौर पर "बॉलीवुड" के नाम से जाना जाता है, भारत और विश्व भर में हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आ रहा है। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि भाषा, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को वृहत स्तर पर फैलाने का एक शक्तिशाली माध्यम भी है। वैश्विक स्तर पर भी भारतीय फिल्म उद्योग ने हिंदी का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार प्रसार किया है। पिछले सौ वर्षों में, हिंदी सिनेमा ने अपनी कहानियों, संगीत और संवादों के जरिए हिंदी को न सिर्फ भारत के कोने–कोने तक पहुँचाया, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर भी लोकप्रिय बनाया। इस लेख में हम विस्तार से विचार विमर्श करेंगे कि कैसे फिल्म जगत ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को प्रभावित किया है तथा इससे कुछ आने वाली कुछ चुनौतियों के विभिन्न पहलुओं से समझने का प्रयास करेंगे।

हिंदी सिनेमा का ऐतिहासिक योगदान–

हिंदी सिनेमा इतिहास में हिंदी फिल्मों की शुरुआत 1913 में राजा हरिश्चंद्र (मूक फिल्म) से हुई। दादा साहब फालके ने भारतीय फिल्म जगत कि नीव रखी थी। 1931 में "आलम आरा" के साथ बोलती फिल्मों का युग शुरू हुआ जिसने भारतीय कथानक और संस्कृति को अपना आधार बनाया।। इन शुरुआती फिल्मों ने हिंदी–उर्दू मिश्रित भाषा (हिंदुस्तानी) को अपनाया, जो उस समय आम जनता की समझ में आसान थी। इसने हिंदी को एक ऐसी भाषा के रूप में स्थापित किया जो विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों को जोड़ सकती थी। पराधीनता के दौर में अपने भाषायी आधार के कारण इस चलचित्र ने आज़ादी के वीरों को मानव स्वतंत्रता, एवं सत्य की विजय से संबन्धित संवादों के द्वारा प्रभावित किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, फिल्मों ने "वंदे मातरम्" और "सारे जहाँ से अच्छा" जैसे गीतों के जरिए हिंदी को राष्ट्रभक्ति से जोड़ा, जिससे इसकी लोकप्रियता और बढ़ी। स्वतंत्रता पश्चात मुगले–ए–आजम और मदर इंडिया के जगत जैसी फिल्मों ने हिंदी सिनेमा को और लोकप्रियता प्रदान की। मुगले–ए–आजम जैसी एतिहासिक पृष्टभूमि पर बने चलचित्रों ने हिंदी भाषा के द्वारा तत्कालीन जनता को मुगलकालीन समाज व्यवस्था और प्रशासन से अवगत कराया। वहीं मदर इंडिया और गंगा जमुना, तीसरी कसम जैसी चलचित्र कथाओं ने भारतीय गांवों में हो रहे जमीनदारी शोषण और ग्रामीण जगत को सामान्य शहरी जनमानस के बीच ले जा कर खड़ा कर दिया। हिंदी भाषी जनता हिंदी के माध्यम से स्वयं को इन कथानको से जोड़ पाती थी। भारतीय फिल्म जगत ने सामाजिक भ्रांतियों, असमानता और शोषण का मुखर विरोध करने के लिए हिंदी भाषी फिल्मों को अपना आधार बनाया।

संगीत और गीतों का प्रभाव–

हिंदी फिल्मों का संगीत हिंदी भाषा के प्रसार का सबसे बड़ा माध्यम रहा है। भारतीय संस्कृति में गायन और संगीत की परंपरा पौराणिक काल से चली आ रही है। भारतीय फिल्म निर्माता इसे भलीभाँति जानते थे कि भारतीय लोग संगीत प्रेमी तथा उत्तम संगीत के पारखी भी हैं। ठुमरी,खयाल,पंजाबी बोलियाँ आदि जैसे लोक गायन जहां कुछ क्षेत्रों तक सीमित थे। भारतीय संगीतज्ञों ने देश के कोने कोने से कलाकारों को खोज कर उन संगीतों पर आधारित हिंदी गीत लिखे और इन्हें चलचित्रों में जगह दी। गीतों और धुनों की सहायता से हिंदी वृहत स्तर पर हिंदी भाषियों के ज़ुबान का हिस्सा बन गयी। 60 से 70–80 के दशक तक नौशाद, मन्ना डे, सहगल के बाद एस. डी. बर्मन तथा आर. डी. बर्मन जैसे संगीतकारों तथा साहिर लुधियानवी जैसे गीत लिखने वाले गीतकारों ने हिंदी गीतों पर प्रयोग किए। ये लता मंगेशकर, किशोर कुमार, मोहम्मद रफी का दौर था। जिसमें जंजीर, शोले जैसी फिल्मों के गाने हिट हुए।

फिर आया 90 के दशक का दौर जिसमें कुमार शानू, सोनू निगम, अभिजीत जैसे गायकों ने हिंदी भाषा के जरिये अपनी आवाज का जादू भारतीय जनता पर बिखेर दिया। "शोले" के "ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे" से "दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे" के "तुझे देखा तो ये जाना सनम" से लेकर तक, इन गीतों ने हिंदी को घर–घर तक पहुँचाया। गीतकारों जैसे गुलज़ार और जावेद अख्तर ने अपनी शायरी और काव्यात्मक शैली से हिंदी की समृद्धि को प्रदर्शित किया। ये गीत न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में बसे भारतीय समुदायों और हिंदी न जानने वालों के बीच भी लोकप्रिय हुए, जिससे भाषा का दायरा बढ़ा। इसी दौरान बप्पी लहरी जैसे गीतकारों ने पॉप संस्कृति में हिंदी गानों को समावेशित कर उस समय के जंवा दिल कि धड़कनों को खूब लुभाया। यह कहना कहीं से भी अतिशयोक्ति नहीं है कि भारतीय फिल्मी जगत ने भारतीय व विदेशी संगीत विधाओं तथा हिंदी गानों के मिश्रण से निरंतर नए प्रयोग कर हिंदी की संगीतमय शक्ति को सम्पूर्ण संसार के सामने रखा और हिंदी को एक गायन शैली से ओतप्रोत और मंझी हुई भाषा का स्थान दिया।

संवादों की लोकप्रियता–

हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता का एक कारण इनमें संवाद लेखन भी है। शोले के संवाद जावेद अख्तर और सलीम ने लिखे थे। हिंदी फिल्मों के संवादों ने बोलचाल की हिंदी को एक नया आयाम दिया। "मुगल–ए–आज़म" का "प्यार किया तो डरना क्या" हो या "शोले" का "कितने आदमी थे?", इन संवादों ने हिंदी को जन–जन की ज़ुबान पर चढ़ा दिया। भारतीय फिल्म जगत के कई कलाकार तो ऐसे थे कि वो अपने तथा पूरी फिल्म के संवाद स्वयं ही लिखते थे। महमूद जी तथा कादर खान जी अपने अभिनय के संवाद स्वयं ही लिखते थे।

भारतीय फिल्म जगत में यहाँ तक कहा जाता है कि आज कि भारतीय फिल्मों में हम संवाद लेखन का जो उन्नत स्वरूप देखते हैं उसके पीछे कादर खान का विशेष योगदान है। उनके इस योग दान के लिए उन्हे फिल्मफेयर का लाइफ टाइम अचिवेमेंट पुरस्कार भी मिल चुका है। कम शब्दों के संवाद में इतनी प्रभावशाली बात कह जाना कि ये संवाद लोग अपनी रोज़मर्रा की बातचीत में उपयोग करने लगे। यही तो भारतीय संवाद लेखकों की अद्भुत भूमिका थी। इससे हिंदी का सरल और प्रभावी रूप आम लोगों तक पहुँचा, जिसने इसे एक जीवंत और लचीली भाषा के रूप में स्थापित किया। संवादों के नित नए प्रयोगों और लेखनों ने हिंदी के मनोरंजक परिदृश्य को भारतीय श्रोताओं के सामने रखा तथा हिंदी को और भी अधिक लोकप्रिय बनाया।

क्षेत्रीय और वैश्विक प्रसार–

हिंदी सिनेमा ने भारत के उन क्षेत्रों में भी हिंदी को लोकप्रिय बनाया, जहाँ यह मातृभाषा नहीं थी। दक्षिण भारत, पूर्वोत्तर और अन्य गैर–हिंदी भाषी क्षेत्रों में डबिंग और उपशीर्षक के जरिए फिल्मों ने हिंदी को पहुँचाया। आज अधिकतर दक्षिण भारतीय फिल्में हिंदी भाषियों की पसंद में हिंदी मे रूपांतरित की जाती है। बाहुबली और आरआरआर जैसी दक्षिण भारतीय फिल्में इसके उदाहरण हैं। यह दर्शाता है कि दक्षिण भारतीय फिल्म जगत भी हिंदी को कितना प्रेम दे रहा है। इसके अलावा, विदेशों में–खासकर मध्य पूर्व, अमेरिका, ब्रिटेन और रूस जैसे देशों में–हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता ने हिंदी सीखने की रुचि पैदा की। उदाहरण के तौर पर,राज कपूर की मेरा नाम जोकर पिक्चर, मिथुन चक्रबोर्ती की डिस्को डांसर और मेरा नाम रॉकी जैसी पिक्चरें रूस में प्रख्यात थी। वहीं मध्यपूर्व खाड़ी देशों में शाहरुख खान और आमिर खान जैसे सितारों की फिल्मों ने विदेशी दर्शकों को हिंदी शब्दों और वाक्यांशों से परिचित कराया। चंकी पांडे जैसे कलाकार जिनके काम को जितना भारतीयों ने सराहा है वहीं बांग्लादेश में भी हिंदी फिल्मों की वजह से पहचान मिल पायी और हिंदी का भी प्रचार हुआ। फिजी, त्रिनिदाद–टोबेगो, मॉरीशस आदि द्वीपीय देशों मे चलचित्रों को और हिंदी भाषियों के कारण लोकप्रियता मिली, फिल्मों का ही श्रेय है जो कि भारतीय हिंदी भाषियों और इन देश के हिंदी भाषियों की हिंदी भाषा में समानता देखने को मिलती है।

भाषा का सरलीकरण और विकास–हिंदी फिल्मों के प्रारम्भिक दौर में हिंदुस्तानी भाषा का उपयोग होता था जो की उर्दू तथा हिंदी भाषा का मिश्रण थी। समय के साथ हिंदी फिल्मों ने संस्कृतनिष्ठ हिंदी के क्लिष्ट स्वरूप से किनारा किया तथा हिंदी के आम बोलचाल के भाषीय स्वरूप को बढ़ावा दिया, जिससे यह आम लोगों के लिए सुलभ हुई। साथ ही, इसमें उर्दू, पंजाबी, भोजपुरी और अंग्रेजी के शब्दों का मिश्रण हुआ, जिसने हिंदी को एक समावेशी और आधुनिक भाषा बनाया। हालाँकि, कुछ आलोचकों का मानना है कि इससे हिंदी की शुद्धता प्रभावित हुई, लेकिन इसने भाषा को जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखा। हिंदी भाषा की उपयोगिता पर फिल्म जगत ने प्रशंसनीय प्रभाव डाला है।

चुनौतियाँ और आलोचनाएं–

हिंदी फिल्मों पर यह आरोप भी लगता रहा है कि वे हिंदी को व्यावसायिकता और सतहीपन की ओर ले गए हैं। अंग्रेजी शब्दों का बढ़ता प्रयोग ("हिंग्लिश") और क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा जैसे मुद्दों ने बहस छेड़ी है। कई बार यह भी प्राय सुनने को मिलता है कि नायक–नायिकाओं को हिंदी संवादों को रोमन लिपि में लिख कर देना पड़ता है। जिससे हिंदी की वर्तनी और उच्चारण में त्रुटियाँ देखने को मिलती हैं। आधुनिक संवाद लेखकों ने वाकई नई पीढ़ी के दर्शकों को प्रभावित करने तथा निरंतर नवीन प्रयोग की लालसा में अन्य भाषाओं के शब्दों को मिला कर हिंदी संवाद लिखने चालू कर दिए हैं, जिससे त्रुटियों की आशंका और भी अधिक बढ़ जाती है। नव पीढ़ी में हिंदी का कम ज्ञान होना भी एक फैशन का विषय होना, इस सोच के निर्माण का श्रेय भी हिंदी फिल्म जगत को ही जाता है। उदाहरण के लिए कई फिल्मों में दो कलाकारों के संवादों में यह दिखाया जाता है कि एक किरदार जहां शुद्ध हिंदी में बात कर रहा है तो दूसरा कुछ शुद्ध शब्दों पर अनभिज्ञता दिखते हुए अपने समूह के साथ उसे ट्रोल यानि हतोत्साहित कर रहा है। इस तरह के सीन हिंदी के प्रति एक अविकसित और विकृत मानसिकता का निर्माण कर रहे हैं। इस समस्या का समाधान यह ही है कि भारतीय लेखक अपने दायित्व को समझें, उन्हें यह समझना होगा कि इतने भारतीय युवा उनकी फिल्मों को देखते हैं उस से प्रोत्साहित होते हैं तथा पर्दे पर दिखाई गयी जीवन शैली से प्रभावित होते हैं। तो उन्हे भाषा का शुद्ध, सरल और सहज स्वरूप प्रदान करना एक लेखक का दायित्व बनता है ताकि भाषा की दुर्दशा न हो। इन सब समस्याओं के उपरांत भी यह सिद्ध और सत्य है कि फिल्मों ने हिंदी को एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

निष्कर्ष–

हिंदी फिल्म जगत ने हिंदी भाषा को न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान के रूप में स्थापित किया, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर भी ले गया। यह एक ऐसा माध्यम रहा है जिसने हिंदी को मनोरंजन के साथ–साथ भावनाओं, विचारों और एकता का प्रतीक बनाया। आज डिजिटल युग में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के जरिए भी हिंदी फिल्में और वेब सीरीज भाषा के प्रसार को नई दिशा दे रही हैं। वहीं हिंदी प्रेमियों और हिंदी भाषियों के लिए रोजगार के नित्य नए अवसर भी प्रदान करता है। भारतीय हिंदी फिल्म जगत आज कई अरब डॉलर का बाज़ार है। इस तरह, फिल्म जगत का हिंदी के प्रचार–प्रसार में योगदान अतुलनीय है, और यह भविष्य में भी इसे समृद्ध करता रहेगा।

– नितेश तिवारी
गाज़ियाबाद यूनिट

हमारे कर्मचारियों की प्रतिभा...

मंगला रश्मि
कार्पोरेट कार्यालय

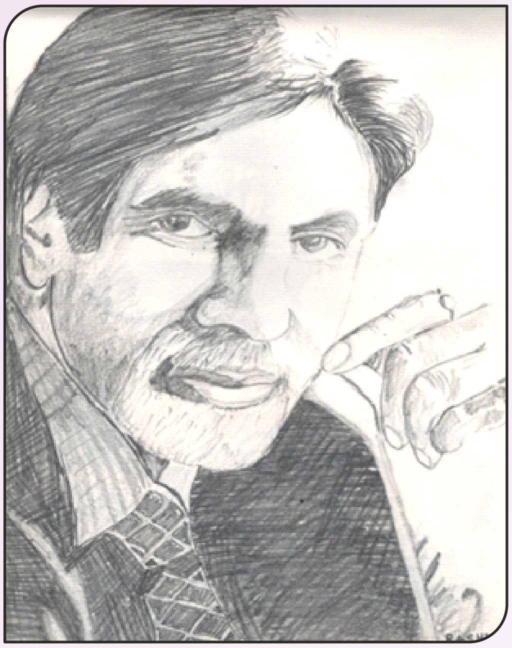

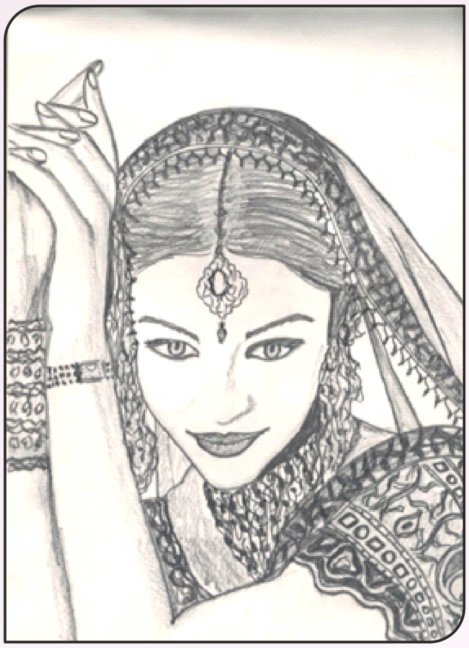

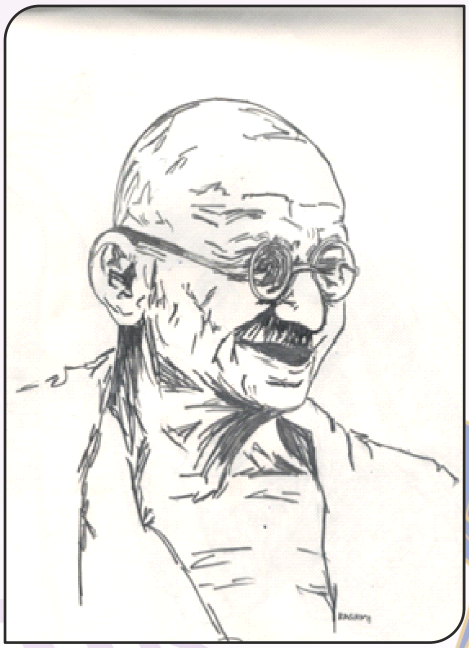

हिंदी का प्रचार – प्रसार और मनोरंजन जगत

कोई भी भाषा लोगों के बीच सभी स्तर पर विचारों के आदान–प्रदान का सबसे सरल साधन होता है। हिंदी, भारत के बहुत बड़े भू–भाग में बोली और समझी जाती है इसीलिए हिंदी को भारत की राजभाषा होने का सम्मान प्राप्त है। भारत में यूँ तो हिंदी के अतिरिक्त बहुत–सी भाषाएं बोली जाती हैं और उन सभी भाषाओं को हिंदी की सहयोगी भाषाएं होने का गौरव प्राप्त है। हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है और इस लिखने और बोलने में समानता के कारण ही, दोनों पक्षों को कहने और समझने में आसानी होती है और अब तो भारतीयों के विश्व में सभी जगह आवास करने के कारण हिंदी, भारत के अतिरिक्त पूरे विश्व में भी बोली और समझी जाने लगी है और विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा बन गई है।

हिंदी के प्रसार में हिंदी सिनेमा के योगदान को कौन नहीं जानता है हिंदी सिनेमा के कारण हिंदी के प्रचार को विशेष बल मिला है और हिंदी सिनेमा की कामयाबी इस तथ्य को भली भाँति बयान करती है। यूँ तो सिनेमा की भाषा, वेशभूषा, अभिनय, सोच, फैशन आदि हर क्षेत्र में दर्शकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है साथ ही सिनेमा, समाज के ज्वलंत मुद्दों को भी दर्शकों के समक्ष रख ऐसे मुद्दों पर सोचने के लिए विवश करता रहा है। गाने और लोकगीतों के रूप में भी विभिन्न तरह के संदेश समाज को जागरूक करते रहे है। वर्तमान में सफाई अभियान और पोलियो से बचाव के कार्यक्रम में गाने के रूप दिए संदेश का समाज पर असर हम सभी प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं।

टेलीविज़न हिंदी सिनेमा की एक मुख्य शाखा है। टेलीविज़न प्रसारण के शुरुआत में सरकार द्वारा दूरदर्शन पर राष्ट्रीय प्रसारण के समय पूरे देश में हिंदी भाषा में मुफ्त मनोरंजन की उपलबध्ता ने हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए एक बहुत बड़ा सराहनीय कदम रहा है। इसके कारण हिंदी को देश के सभी क्षेत्रों में समान विकास का मौका मिला है और विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी बोलने और समझने में आने वाली समस्याओं का भी धीरे–धीरे स्वयं निवारण होता रहा है और मनोरंजन के लिए हिंदी फिल्म, धारावाहिक, जानकारियों के लिए समाचार और सभी तरह के विज्ञापनों का दर्शकों तक हिंदी में पहुंचने के कारण ही सिनेमा और टेलीविजन की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही गई है। यह सभी देशवासियों का हिंदी प्रेम के कारण ही संभव हुआ है।

भारतीय सिनेमा का एक बहुत ही सराहनीय कदम है कि दूसरी भाषाओं की फिल्मों या धारावाहिकों की आवाज को हिंदी में परिवर्तित (डब) कर दर्शकों को दिखाना या फिल्मों या धारावाहिक का प्रसारण करते समय वार्तालाप को हिंदी भाषा में लिखित रूप में स्क्रीन के निचले भाग में धारा प्रवाह से दिखाना यह सभी हिंदी भाषा के प्रचार को बढ़ाने में अत्यंत सहायक रहा है। यह प्रयास तो बोलने और सुनने में असमर्थ लोगों के लिए भी हिंदी भाषा के ज्ञान बढ़ौतरी में भी का सहायक सिध्द हुआ है।

सिनेमा व टेलीविजन के बाद अब मोबाइल फोन मनोरंजन का साधन बन गया है। यह मोबाइल फोन संपर्क (बातचीत) के साथ–साथ, कैमरा, टार्च, रेडियो के अलावा सोशल मीडिया से मनोरंजन और कंप्यूटर के विभिन्न कार्य भी कर रहा है। हिंदी भाषा के प्रभाव के कारण ही मोबाइल निर्माताओं को, मोबाइल को लोकप्रिय करने के लिए हिंदी की सहायता लेनी पड़ी है। मोबाइल पर अब चालू (आन) करने से लेकर सभी प्रकार के कार्य हिंदी में आसानी से किए जा सकते है। हिंदी के प्रभाव से गूगल जैसी अंतराष्ट्रीय कंपनी को भी अपनी सभी सेवाएं भारत में हिंदी भाषा में उपलब्ध करवाने के किए मजबूर होना पड़ा है। कंप्यूटर ओपरेटिंग सिस्टम लिखने वाली अंतराष्ट्रीय कंपनी विंडोज ने भी ओपरेटिंग सिस्टम में सुधार कर कंप्यूटर पर भी हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध करने को मजबूर हुई है। अब कंप्यूटर और मोबाइल से हिंदी टाइपिंग के लिए भी विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध है।

अंत में मैं तो यही कहूँगा कि सिनेमा के समानुसार विभिन्न रूप हमारे समाज के सामने आए है परंतु सिनेमा के सभी रूपों के विकास में भी हिंदी को अंग–संग बनाए रखना, हिंदी सिनेमा का हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में सक्रिय रूप से सहयोग है और यह प्रयास हिंदी को विश्व की अग्रणी भाषा बनाने में सहायक साबित होगा।

अनूप कुमार
पंचकुला

हिंदी सिनेमा का वैश्विक प्रभाव

हिंदी सिनेमा, जिसे बॉलीवुड के नाम से जाना जाता है, ने अपनी रंगीन फिल्मों, आकर्षक गीतों और मनमोहक कहानियों के साथ दुनिया भर में लोगों का दिल जीत लिया है। जैसे–जैसे बॉलीवुड की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है, वैसे–वैसे हिंदी भाषा के कौशल का मूल्य भी बढ़ता जा रहा है। आप बॉलीवुड फिल्मों के प्रशंसक हैं या भारतीय संस्कृति से जिज्ञासु हैं तो स्वाभाविक रूप से आपका हिंदी भाषा से भी लगाव होगा। वास्तव में सिनेमा मनोरंजन मात्र से अधिक देता है।

बॉलीवुड के वैश्विक प्रभाव को समझने में हिंदी भाषा का कौशल क्यों महत्वपूर्ण है

बॉलीवुड फिल्में केवल मनोरंजन नहीं हैं, वे सांस्कृतिक दूत हैं जो भारत की समृद्ध परंपराओं, विविध परिदृश्य और सामाजिक गतिशीलता को दर्शाती हैं। हिंदी को समझने से आपको इन फिल्मों की मूल रूप से सराहना करने, संवाद, गीत और भावनाओं की बारीकियों में डूबने का मौका मिलता है जो भाषा की बाधाओं को पार करती हैं।

दुनिया भर में हिंदी सिनेमा का योगदान और प्रभाव

1. हिंदी साहित्य और संस्कृति का संवर्धन – कई हिंदी फिल्में हिंदी साहित्य और कविता से प्रेरणा लेती हैं, जिससे दर्शकों को शास्त्रीय और समकालीन कार्यों की जानकारी मिलती है। प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन और अन्य लेखकों की रचनाओं पर आधारित फिल्में साहित्यिक हिंदी को प्रकाश में लाती हैं। यहां तक कि मूल पटकथाओं में भी अक्सर काव्य संवाद, मुहावरे और कहावतें शामिल होती हैं जो हिंदी के प्रभावी प्रचार–प्रसार में योगदान देती हैं।

2. विश्वव्यापी प्रभाव और प्रशंसक – डिजिटल प्लेटफार्मों के उदय के साथ, हिंदी फिल्में अब दुनिया भर में दिखाई जा रही हैं, जो मध्य पूर्व, अफ्रीका, दक्षिण–पूर्व एशिया, यूरोप और अमेरिका के दर्शकों तक पहुंच रही हैं। इस वैश्विक प्रदर्शन ने हिंदी को एक व्यावहारिक उपकरण में बदल दिया है, जिससे इसके सांस्कृतिक मूल्य में वृद्धि हुई है और इसे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिक मान्यता प्राप्त भाषाओं में से एक बना दिया है। हिंदी फिल्मों के संवाद और गीत सांस्कृतिक प्रतीक बन गए हैं जो अक्सर विदेशी प्रशंसकों के बीच भाषा में रुचि पैदा करते हैं।

3. हिंदी का मानकीकरण – हिंदी सिनेमा ने भी भाषा के मानकीकरण में योगदान दिया है। फिल्मकार और लेखक अक्सर औपचारिक हिंदी और बोलचाल की अभिव्यक्तियों के मिश्रण का उपयोग करते हैं जो ज्यादातर दर्शकों को समझ में आते हैं। यह मिश्रण साहित्यिक हिंदी और बोली जाने वाली बोलियों के बीच के अंतर को पाटने में मदद करता है, इस प्रकार यह भाषा के सामान्य रूप को लोकप्रिय बनाता है जो विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के लिए सुलभ है।

4. मनोरंजन के माध्यम से भाषा सीखना – हिंदी सिनेमा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान भाषा को पढ़ाने में अपनी अनौपचारिक भूमिका रहा है। हिंदीतर भाषी दर्शक अक्सर फिल्में देखकर मूल शब्दावली, वाक्यांश और अभिव्यक्ति सीखते हैं। संवाद, गीत और नाटकीय कथाएं विशेष रूप से युवा दर्शकों के लिए सुखद और यादगार तरीके से भाषा के कौशल को मजबूत करने में मदद करती हैं।

5. संगीत की भाषा – अपनी मधुर धुनों और भावपूर्ण गीतों के लिए विख्यात हिंदी फिल्म संगीत भाषाई सीमाओं को पार करते हुए दुनिया भर में प्रिय बन गया है। हिंदी सीखने से आप बॉलीवुड गीतों की काव्यात्मक सुंदरता को समझ और उसका आनंद ले सकते हैं।

6. भाषाई समरसता के रूप में बॉलीवुड – हिंदी की लोकप्रियता पर बॉलीवुड के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक भाषाई समरसता के रूप में उसकी भूमिका है। कोलकाता से केरल और गुजरात से असम तक, बॉलीवुड ने हिंदी को ऐसे घरों में लाया है जहां यह शायद ही बोली जाती हो। यहां तक कि दक्षिणी राज्यों में जहां क्षेत्रीय भाषाएं हावी हैं, हिंदी फिल्मों का व्यापक उपयोग किया जाता है, और गीत और संवाद अक्सर लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा बन जाते हैं। इससे हिंदी को अधिक सुलभ बनाने और अखिल भारतीय पहचान को बढ़ावा देने में मदद मिली है।

हिंदी सिनेमा का वैश्विक प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जो नाटक, संगीत और सांस्कृतिक विविधता के अपने अनूठे मिश्रण के साथ दुनिया भर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध करता है, यह भाषा के प्रचार–प्रसार का एक शक्तिशाली माध्यम है। हिंदी सीखने से, आप न केवल बॉलीवुड फिल्मों के जादू को अनुभव करते हैं, बल्कि बहुमूल्य भाषा कौशल भी प्राप्त करते हैं जो आपके करियर की संभावनाओं और सांस्कृतिक समझ को भी बढ़ा सकते हैं। भाषा को कथाओं, संगीत और भावनाओं में बुनकर, हिंदी सिनेमा हिंदी भाषा के सबसे प्रभावी और दूरगामी दूतों में से एक बन गया है।

दीपक कुमार
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स,

भगवान कृष्ण और उनके मोर पंख की रोचक कथा

भगवान कृष्ण हिंदू धर्म में सबसे लोकप्रिय और पूजनीय देवताओं में से एक हैं। उन्हें भगवान विष्णु के आठवें अवतार के रूप में पूजा जाता है और उन्हें भगवद्गीता में उनकी दिव्य शिक्षाओं और महाकाव्य महाभारत में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है।

यह कहानी राम के वनवास के दौरान एक मार्मिक क्षण के बारे में है। सीता की प्यास बुझाने के लिए एक मोर के असाधारण बलिदान के कारण राम ने एक वादा किया जिसे कृष्ण के रूप में उनके अगले अवतार में पूरा किया गया।

वनवास के दौरान एक दिन माता सीता को बहुत प्यास लगी। राम और लक्ष्मण ने पानी की तलाश की, लेकिन उन्हें पानी नहीं मिला। सीता की प्यास बुझाने को आतुर राम ने निकटतम जल स्रोत का मार्ग दिखाने के लिए प्रकृति माता से प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना के फलस्वरूप एक मोर प्रकट हुआ और उसने राम को बताया कि पास में ही एक जल स्रोत है। हालांकि, जंगल घना था और उसमें चलना मुश्किल था। मोर ने जल स्रोत की ओर उड़कर और रास्ते में अपने पंख गिराकर राम को रास्ता दिखाने का उपाय किया।

यह सर्वविदित है कि मोर केवल प्रजनन काल के बाद ही अपने पंख गिराते हैं, आमतौर पर फरवरी और अगस्त के बीच। यदि किसी अन्य समय उनके पंख झड़ जाते हैं, तो मोर की मृत्यु हो जाती है। श्रीराम का मार्ग प्रशस्त करते–करते मोर की दुखद मृत्यु हो जाती है। जब तक वह जल स्रोत तक पहुँचा, उसके प्राण–पखेरू उड़ चुके थे।

मोर के इस असाधारण बलिदान से अभिभूत राम को कृतज्ञता और दु:ख की गहरी भावना महसूस हुई। फिर उन्होंने एक गंभीर वचन दिया। "चूंकि तुमने मेरे और मेरी प्रिय सीता के लिए अपना जीवन दिया है," राम ने गहरी श्रद्धा के साथ कहा, "मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि तुम्हारा बलिदान अनंत काल तक याद रखा जाए। अपने अगले अवतार में, जब मैं कृष्ण का रूप धारण करूंगा, तो मैं तुम्हारे सुंदर पंखों से खुद को सजाऊंगा। तुम्हारी स्मृति में मैं उन्हें अपने सिर पर रखूंगा, शिरोधार्य करूंगा ताकि वे तुम्हारी वीरता और निस्वार्थता की सदा याद दिलाएं। यह न केवल तुम्हारे प्रति मेरे सम्मान और कृतज्ञता का प्रतीक होगा बल्कि दुनिया के लिए तुम्हारे द्वारा किए गए अपार बलिदान का साक्षी भी होगा।"

राम के वचन से यह सुनिश्चित हो गया कि मोर की विरासत जीवित रहेगी और कृष्ण द्वारा धारण किए गए मोर पंख आने वाली पीढ़ियों के लिए दैवीय कृपा और बलिदान का प्रतीक बन जाएंगे।

मोर के बलिदान का सम्मान करने की राम की प्रतिज्ञा ने सुनिश्चित किया कि उसके महान कार्य को हमेशा याद रखा जाएगा। कृष्ण के रूप में अपने अगले अवतार में, उन्होंने मोर के पंख पहने, जो दिव्य कृतज्ञता और शाश्वत स्मृति का प्रतीक था।

देविका डी पी
कार्पोरेट कार्यालय

सिनेमा जगत और हिंदी

हिंदी सिनेमा, जिसे बॉलीवुड भी कहा जाता है, भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक धारा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। फिल्में न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, वे समाज के भीतर भाषा, संस्कृति और परंपराओं को भी फैलाती हैं। हिंदी सिनेमा का एक विशेष योगदान हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार में है। इस लेख में हिंदी सिनेमा के हिंदी भाषा के प्रचार में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

हिंदी सिनेमा का आरंभ वर्ष 1913 में दादा साहब फालके निर्देशित राजा हरिश्चंद्र से हुआ था। तब सिनेमा के लिए अंग्रेजी तथा अन्य प्रांतीय भाषाओं का आम चलन था, लेकिन धीरे–धीरे हिंदी सिनेमा ने अपना स्थान बनाया और हिंदी भाषा को एक व्यापक रूप से समर्थन प्रदान किया। शुरुआती युग की फिल्मों में हिंदी भाषा की सीमित उपयोगिता रही, लेकिन जैसे–जैसे सिनेमा का विस्तार होने लगा, हिंदी फिल्मों में हिंदी की प्रभुता बढ़ने लगी।

हिंदी सिनेमा ने न केवल शहरी लोगों तक पहुँच बनाई, बल्कि ग्रामीण भारत में भी अपनी पहुँच बनाई। भारतीय समाज में, जहाँ विभिन्न क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती थीं, वहाँ हिंदी सिनेमा ने एक सेतु का काम किया। हिंदी फिल्में, खासकर उन दिनों में जब टेलीविज़न का प्रभाव कम था, ने हिंदी भाषा को सिनेमा द्वारा लोगों के दिलों तक पहुँचाया। खासकर 1950 व 1960 के दशकों में हिंदी फिल्में सामाजिक और राजनीतिक संदेश देती थीं, जिनमें हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार अनायास ही हो रहा था।

हिंदी सिनेमा के गीत और बोल हिंदी भाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। हिंदी फिल्मों के गीत, जो अपनी मधुरता की धुनों और बोलों के कारण बहुत प्रसिद्ध होते हैं, हिंदी भाषा को सामान्य जनमानस तक पहुँचाते हैं। फिल्म के गीतों में प्रयुक्त शब्दावली, मुहावरे, और बोलचाल की भाषा हिंदी के विभिन्न रूपों को प्रकट करते हैं। जैसे कि 1970 और 1980 के दशक के प्रसिद्ध गीतों में हिंदी की विशिष्टता को देखा जा सकता है। जैसे फिल्म शोले का गीत "ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे" या फिल्म मुगल–ए–आज़म का गीत "प्यार किया तो डरना क्या" आदि गीतों न केवल हिंदी को लोकप्रिय कर दिया, बल्कि इसे जन–जन की जुबान पर चढ़ा दिया।

साथ ही, फिल्मों के संवादों का भी बड़ा प्रभाव होता है। फिल्मी संवादों में उपयोग की जाने वाली हिंदी भाषा, सामान्य जनता द्वारा आसानी से समझी जाती है और वे संवाद घर–घर तक पहुँचते हैं। जैसे फिल्म 'दीवार' का संवाद "मेरे पास माँ है", आज भी लोकप्रिय है। इस प्रकार हिंदी फिल्मों के लोकप्रिय संवादों ने जहां लोगों के दिलों में घर किया, साथ ही हिंदी भाषा को भारतीय समाज में दूर–दूर तक प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

इनके अतिरिक्त, हिंदी फिल्मों के पात्र आमतौर पर हिंदी भाषा और संस्कृति से जुड़े होते हैं। फिल्में जैसे 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'कभी खुशी कभी ग़म', 'लगान' आदि में पात्रों को एक प्रमुख भूमिका में पेश किया गया है। इन फिल्मों में पात्रों के बीच का संवाद और विचार व्यक्त करने का स्वभाव सीधे हिंदी भाषा से जुड़ा होता है। इसका सीधा प्रभाव इस पर पड़ता है कि दर्शक इन संवादों और पात्रों के ज़रिए हिंदी भाषा को और अधिक आत्मसात कर लेते हैं।

सिनेमा के कई अन्य पहलुओं से हिंदी भाषा का प्रसार–प्रचार हुआ है, चाहे वह संवाद हों या गीत। या फिर फिल्म के दृश्य हों या पात्र। यह सभी मिलकर हिंदी भाषा को समृद्ध करने में अपना योगदान प्रदान करते हैं। हिंदी सिनेमा ने न केवल हिंदी बोलने वालों को प्रभावित किया है, बल्कि हिंदी न बोलने वाले क्षेत्रों में भी हिंदी को प्रचलित किया है। देश के विभिन्न हिस्सों में, जहाँ लोग अपनी स्थानीय भाषाओं का उपयोग करते हैं, हिंदी सिनेमा ने इन भाषाओं के साथ–साथ हिंदी को भी एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि आज दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत, पश्चिमी भारत से लेकर पूर्वी भारत तक, हिंदी सिनेमा के दर्शक वर्ग में विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से लोग शामिल हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत में जहां तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ जैसी भाषाएँ बोली जाती हैं, वहां भी हिंदी सिनेमा का बहुत प्रभाव है। यही प्रभाव यह दर्शाता है कि हिंदी फिल्में और हिंदी भाषा केवल एक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में काम कर रही हैं।

हिंदी सिनेमा ने न केवल मनोरंजन के रूप में, बल्कि शैक्षिक दृष्टिकोण से भी हिंदी भाषा के प्रचार में अपना योगदान दिया है। कई फिल्में ऐसी हैं, जो सामाजिक और शैक्षिक मुद्दों पर आधारित होती हैं और इनमें हिंदी का प्रयोग होता है। फिल्में जैसे 'तारे जमीं पर', 'चक दे! इंडिया', 'स्वदेश' और 'लगान' ने केवल भारतीय समाज के मुद्दों को दिखाया, बल्कि इन फिल्मों ने हिंदी को एक संस्कृतनिष्ठ और विचारशील भाषा के रूप में प्रस्तुत किया। इसके अलावा, फिल्में और टेलीविजन धारावाहिक आजकल शैक्षिक चैनलों के रूप में भी हिंदी का प्रचार कर रहे हैं। सरकारी और निजी चैनलों पर चलने वाली शिक्षा आधारित कार्यक्रमों में हिंदी का प्रचलन और प्रभाव बढ़ा है, जिससे

छात्रों और आम जनता में हिंदी भाषा के प्रति रुचि और समझ बढ़ी है।

हिंदी सिनेमा ने वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। विदेशों में भी हिंदी सिनेमा का बड़ा दर्शक वर्ग है। खासकर खाड़ी देशों, यूरोप और अमेरिका में हिंदी फिल्में देखी जाती हैं। इस वैश्विक प्रसार ने हिंदी भाषा के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अन्य देशों में और भारतीय प्रवासियों के बीच भी हिंदी सिनेमा के द्वारा हिंदी भाषा को और भी लोकप्रिय बनाने में मदद मिली है।

हिंदी सिनेमा के माध्यम से विदेशों में भारतीय संस्कृति, भाषा और परंपराओं का प्रचार हुआ है। बॉलीवुड फिल्में, जिनमें हिंदी का व्यापक उपयोग होता है, भारतीय मूल के लोगों के लिए अपनी जड़ों से जुड़े रहने का एक माध्यम बन गई हैं। हिंदी सिनेमा ने मनोरंजन का साधन प्रदान करने के अलावा, हिंदी भाषा के प्रचार में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। फिल्मों के संवाद, गीत, और उनके विषय हिंदी भाषा की महत्ता को समाज में फैलाते हैं। हिंदी सिनेमा के प्रभाव से हिंदी भाषा भारतीय सीमाओं तक ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर भी फैली हुई है। हिंदी सिनेमा ने हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित किया है, और यह प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इसलिए, यह कहना गलत नहीं होगा कि हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा के प्रचार में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया है और भविष्य में भी देता रहेगा।

देवांश सिंह
सीआरएल गाजियाबाद

ये ज़िंदगी

ये ज़िंदगी कितनी खूबसूरत है
जीने का सबक सिखाया इसने
कभी खुशी में हंसना
कभी दुख में रुलाया इसने
कभी दूसरों को अपना
कभी अपनों को ही गंवाया इसने
कभी अकेले में भीड़ साथ थी
कभी भीड़ में भी अकेला बनाया इसने
ज़िंदगी के खेल में कभी हारना
कभी हार के भी जीतना सिखाया इसने
कभी चलते हुए गुमराह हुआ जब
सही राह दिखाया इसने
ये ज़िंदगी कितनी खूबसूरत है
जीने का सबक सिखाया इसने!

प्रदीप कौर
पंचकुला

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

हिंदी की शक्ति को बढ़ाता बॉलीवुड

हिंदी सिनेमा जिसे लोकप्रिय रूप से बॉलीवुड के रूप में जाना जाता है, केवल मनोरंजन का एक रूप नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक शक्ति है जिसने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्वेत–श्याम फिल्मों के प्रारंभिक दिनों से लेकर वैश्वीकृत सिनेमा के आधुनिक युग तक, बॉलीवुड ने हिंदी को न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में व्यापक रूप से बोली और समझी जाने वाली भाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिंदी का राष्ट्रव्यापी प्रचार – 1930 के दशक में अपनी स्थापना के बाद से, हिंदी सिनेमा हिंदी भाषा का प्रसार करने का एक शक्तिशाली माध्यम रहा है। प्रथम भारतीय बोलती फिल्म आलम आरा (1931) जैसी फिल्मों ने लोगों के लिए हिंदी को पेश किया, जिससे इसकी सांस्कृतिक और भाषाई अपील को मजबूत किया गया। दशकों से, बॉलीवुड फिल्में सीखने के एक अनौपचारिक उपकरण के रूप में काम करती रही हैं, जिससे गैर–हिंदी वक्ताओं सहित लाखों लोगों को भाषा को समझने और बोलने में मदद मिली है।

भारत कई भाषाई विविधता वाला देश है। हालांकि हिंदी आधिकारिक भाषाओं में से एक है, भारत के कई हिस्से मुख्य रूप से अन्य भाषाएं बोली जाती हैं। हालांकि, बॉलीवुड की फिल्मों ने हिंदी को मनोरंजन और आकांक्षा की भाषा बनाकर इस भाषाई अंतर को पूरा किया है। यहां तक कि तमिलनाडु, केरल और पश्चिम बंगाल जैसे गैर–हिंदी भाषी राज्यों में भी, बॉलीवुड की पहुंच ने कई लोगों को हिंदी शब्द और वाक्यांश अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है।

वैश्विक श्रोताओं पर प्रभाव – भारत के बाहर, विशेष रूप से पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और यहां तक कि अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रों में भी हिंदी सिनेमा के बड़े प्रशंसक हैं। रूस और चीन जैसे देशों में हिंदी सीखने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। कई गैर–हिंदी भाषी दर्शक हिंदी फिल्मों में गीत, संवाद और उप–शीर्षक के माध्यम से भाषा में रुचि विकसित करते हैं।

शानदार संवाद – बॉलीवुड ने हमें कुछ प्रतिष्ठित संवाद दिए हैं जो रोजमर्रा की बातचीत का हिस्सा बन गए हैं उदाहरण के लिए –

- ✓ "मेरे पास मां है" – (दीवार, 1975)
- ✓ "कितने आदमी थे?" – (शोले, 1975)
- ✓ "बाबू मोशाय, ज़िन्दगी बड़ी होनी चाहिए, लम्बी नहीं" – (आनंद, 1971)

ये हिंदी संवाद न केवल हमारा मनोरंजन करते हैं बल्कि हिंदी को मजबूती भी देते हैं।

संगीत के माध्यम से योगदान – बॉलीवुड गीत दुनिया भर में हिंदी का प्रसार करने में सहायक रहे हैं। मेरा जूता है जपानी (श्री 420) जैसी कालातीत क्लासिक फिल्में और तुझ में रब दिखता है (रब ने बना दी जोड़ी) जैसी आधुनिक हिट फिल्मों ने वैश्विक अपील हासिल की है। स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मों के माध्यम से बॉलीवुड का संगीत उद्योग यह सुनिश्चित करता है कि हिंदी गीत लाखों लोगों तक पहुंचे, भाषा के प्रभाव को और मजबूत करते हैं।

शैक्षिक उपकरण के रूप में हिंदी सिनेमा – वैश्वीकरण के साथ, कई विदेशी और एनआरआई (अनिवासी भारतीय) हिंदी सीखने के लिए एक माध्यम के रूप में बॉलीवुड फिल्मों का उपयोग करते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन और जर्मनी जैसे देशों के शैक्षणिक संस्थान छात्रों को वार्तालाप हिंदी सिखाने के लिए हिंदी भाषा के पाठ्यक्रमों में बॉलीवुड फिल्मों को शामिल करते हैं।

हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा के प्रचार– प्रसार में एक अतुलनीय भूमिका निभाई है। सशक्त कहानी, यादगार संवाद और आत्मा को झकझोर देने वाले संगीत के माध्यम से, बॉलीवुड ने हिंदी को दुनिया भर में और अधिक सुलभ और प्रिय बना दिया है। जैसे–जैसे सिनेमा का विकास जारी है, हिंदी को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका केवल मजबूत ही होगी, यह सुनिश्चित करते हुए कि आने वाले वर्षों में भाषा जीवंत और प्रभावशाली बनी रहे।

संगेपल्लि सुरेंदर रेड्डी
हैदराबाद

प्रमुख प्रशासनिक शब्दावली जानें...

अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द
Adjourn	स्थगित
Administered Price	निर्देशित कीमत
Act of Misconduct	कदाचार
Accounting Policies	लेखाकरण नीतियां
Absolute ownership	पूर्ण स्वामित्व
Accessory Licence	अनुषंगी लाइसेंस
Amortization of debt	ऋण मुक्ति
Additional	अतिरिक्त (पदनाम में) अपर
Back log	पिछला बकाया
Back Reference	पिछला संदर्भ
Ballot Box	मतपेटी
Basic Period	मूल अवधि
Pro-rata	यथानुपात
Proof of despatch	प्रेषण का प्रमाण
Qualitative techniques	गुणात्मक तकनीक
knowledge-based system	ज्ञान आधारित प्रणाली
Latitude	छूट
layoff	कामबंदी
leadership quality	नेतृत्व गुण
leave encashment	छुट्टी का नगदीकरण
Man-hours	श्रम घंटे
Manning	कार्मिक आवश्यकता
Unproductive	अनुत्पादक, निष्फल
Unofficial note	अशासकीय टिप्पणी
Reconstitute	पुनर्गठन
Respondent	प्रतिवादी
Replenishment	पुनः पूर्ति
Reshuffle	फेरबदल
Indiscipline	अनुशासनहीनता
Indigenous	स्वदेशी

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

हिंदी और सिनेमा– दूरदर्शन से डिजिटल प्लेटफॉर्म तक

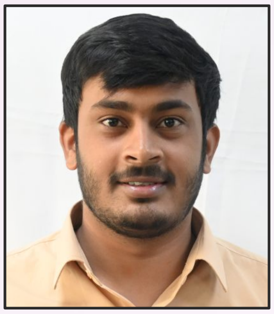

क्या आपने कभी सोचा है कि बचपन में परिवार के साथ देखी गई हिंदी फिल्मों ने हमारी भाषा और संस्कृति को कैसे आकार दिया है? वे फिल्में, जिनके संवाद आज भी हमारे दिलों में गूंजते हैं, अब डिजिटल युग में कैसे बदल रही हैं? क्या आज की हिंदी फिल्मों और वेब सीरीज़ में वही जादू है जो हमने अपने बचपन में महसूस किया था?

बचपन की वो शामें याद हैं जब पूरा परिवार एक साथ बैठकर दूरदर्शन पर आने वाली हिंदी फिल्में देखा करता था? वे फिल्में न केवल मनोरंजन का साधन थीं, बल्कि हमारे परिवारिक मूल्यों, संस्कृति और भाषा के प्रति हमारे जुड़ाव को भी मजबूत करती थीं। जब पहली बार सिनेमा ने पर्दे पर जीवन को अभिव्यक्त किया, तो हिंदी भाषा ने उसे अपनी आत्मा दी। संवादों के माध्यम से भाषा ने न केवल कहानियाँ कही, बल्कि समाज की सोच, मूल्यों और विचारधाराओं को भी प्रतिबिंबित किया। संवादों की शुद्ध हिंदी, गीतों की मधुरता, और कहानियों की गहराई ने हमारी भाषा को समृद्ध किया।

आज डिजिटल क्रांति ने हिंदी को एक नई दिशा में मोड़ दिया है। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने भाषा को नई उड़ान दी, जिससे यह और अधिक गतिशील, आधुनिक और बहुआयामी बन गई। अब हम अपने मोबाइल या लैपटॉप पर कभी भी, कहीं भी हिंदी कंटेंट का आनंद ले सकते हैं। लेकिन इस बदलाव ने हमारी भाषा, हमारे संवादों और हमारी सांस्कृतिक पहचान को कैसे प्रभावित किया है? क्या डिजिटल युग में हिंदी सिनेमा ने अपनी मूल आत्मा को बनाए रखा है, या यह एक नए स्वरूप में ढल गया है? आइए, इस सफर को विस्तार से समझें।

1. हिंदी के स्वर्ण युग से आधुनिक हिंदी सिनेमा तक– भाषा का बदलता स्वरूप

हिंदी भाषा की यात्रा प्राचीन काल से ही अपने भीतर अनेक बदलाव समेटे हुए है। संस्कृत से प्रेरित हिंदी ने कबीर और तुलसीदास की कविताओं में भक्ति की मिठास घोली, तो आधुनिक युग में प्रेमचंद और बच्चन के शब्दों में समाज की संवेदनाएँ उभरीं। सिनेमा के आगमन के बाद, हिंदी भाषा को एक नया मंच मिला।

- **प्रारंभिक युग– जब संवाद भी कविता थे**

  1950 और 1960 के स्वर्णिम वर्षों में, सिनेमा के संवाद केवल शब्द नहीं थे वे धड़कते हुए अशआर थे, जो दिल की गहराइयों से निकलते और आत्मा तक उतर जाते। गुरुदत्त, महबूब खान और राज कपूर की फिल्मों में हिंदी भाषा का स्वरूप शुद्ध, गरिमामयी और काव्यात्मक था। साहिर लुधियानवी, शकील बदायूनी और कैफ़ी आज़मी जैसे शब्दशिल्पियों ने ऐसी भाषा गढ़ी, जो आमजन के समझ में तो आती थी, लेकिन अपनी साहित्यिक ऊँचाइयों से सिनेमा को किसी ग़ज़ल की तरह संगीतमय बना देती थी। "सलाम करने वाले को जिंदा रहने का हक़ है," पृथ्वीराज कपूर की गूँजती आवाज़ में यह संवाद केवल एक वाक्य नहीं था, बल्कि इतिहास के पन्नों पर अंकित होती अमर वाणी थी। आज की फ़िल्मी भाषा में वह शुद्धता और गंभीरता कहीं धुंधली–सी प्रतीत होती है।

- **1970 और 1990 के दशक– (जब शब्दों में आक्रोश और प्रेम का संगम था)**

  समय ने करवट बदली और सिनेमा की भाषा ने अपने पुराने शायराना लिबास को थोड़ा सरल, संवादात्मक और जुझारू बना लिया। 1970 और 1980 के दशक में, अमिताभ बच्चन के "एंग्री यंग मैन" किरदारों ने शब्दों को तलवार की धार बना दिया– कटाक्ष तीखे हुए, भाषा विद्रोह से ओत–प्रोत हो गई। अब संवाद कविता नहीं, आग उगलते नारे थे–एक क्रांति, जो सिनेमा के परदे से निकलकर सड़कों तक फैल गई। फिर आया 90 का दशक–जहाँ आक्रोश के सुर धीमे पड़ने लगे और प्रेम की भाषा ने एक नया स्वरूप लिया। शाहरुख खान के रोमांटिक संवादों में हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी का अनोखा मिश्रण दिखा। "राज, नाम तो सुना होगा?" जैसे शब्द प्रेमी दिलों की धड़कन बन गए। मगर इस नए आकर्षण के बीच, कहीं न कहीं, भाषा की पुरानी गरिमा धुंधली होती चली गई।

- **21वीं सदी– जब भाषा एक बहुरंगी तस्वीर बनी**

  नई सहस्राब्दी के आगमन के साथ, हिंदी सिनेमा की भाषा ने आधुनिकता की राह पकड़ ली–मल्टीप्लेक्स संस्कृति, वैश्वीकरण और डिजिटल युग की आहट ने संवादों में एक नया रंग घोल दिया। अब सिनेमा की भाषा सिर्फ हिंदी नहीं रही; यह हिंग्लिश के रूप में एक नई पहचान गढ़ रही थी।

  "मैं भागने वालों में से नहीं, जो भागते हैं वो भी अपनी ज़िंदगी में कुछ न कुछ तो अचीव कर ही लेते हैं।"–यह संवाद न केवल नए दौर की भाषा को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि अब संवादों में अंग्रेज़ी के शब्द सहजता से घुलने लगे हैं।

  लेकिन यह बदलाव यहीं नहीं रुका। इंटरनेट क्रांति ने एक नए माध्यम को जन्म दिया–डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स, जहाँ भाषा ने और अधिक स्वच्छंदता और विविधता प्राप्त की। अब सिनेमा की भाषा केवल बड़े पर्दे तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह मोबाइल स्क्रीन, वेब सीरीज़ और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग कंटेंट में नए रंगों के साथ उभरने लगी।

समय के साथ, हिंदी सिनेमा की भाषा एक बहती नदी की तरह बदलती रही–कभी कविता की लहरों में बहती, कभी विद्रोह की गर्जना बनती, तो कभी प्रेम की सरगम में ढलती। आज यह भाषा कई धाराओं का संगम है–हिंग्लिश का प्रवाह, क्षेत्रीय बोलियों का स्पर्श और आधुनिक पीढ़ी की अभिव्यक्ति का आईना।

2. डिजिटल प्लेटफॉर्म का आगमन– भाषा के नए आयाम

डिजिटल युग के आगमन से हिंदी सिनेमा की भाषा ने नए रंग और नई उड़ान पाई है। नेटफ्लिक्स, अमेज़ॅन प्राइम, हॉटस्टार, ज़ी 5 और वूट जैसे ओटीटी मंचों ने रचनाकारों को कल्पना की नई आज़ादी दी है, जहाँ शब्द बहते हैं, भावनाएँ खुलकर बोलती हैं, और हर संवाद में जीवन की सुगंध बसती है। अब हिंदी सिनेमा केवल शुद्ध भाषा की परिधि में नहीं बंधा, बल्कि उसमें क्षेत्रीयता के सुर भी घुलने लगे हैं, जिससे यह और भी आत्मीय, और भी जीवंत बन गया है।

- **हिंदी और क्षेत्रीयता का मधुर मिलन**

  कभी सिनेमा की भाषा एकरूपी थी–शुद्ध, संयमित, और साहित्यिक। पर अब, " पंचायत" की गंवई अभिव्यक्ति, "पाताल लोक" की तीखी सच्चाइयाँ, और "गुल्लक" की घर–आंगन सी सरलता–यह सब हिंदी के विस्तृत आकाश में नई बोलियों की पतंगें उड़ाने लगे हैं। अवधी की मिठास, भोजपुरी का ठहराव, बुंदेलखंडी का गर्व–हर क्षेत्रीय भाषा हिंदी में घुलकर उसे और अधिक वास्तविक बना रही है। यह समावेश न केवल संवादों को आत्मीयता देता है, बल्कि भाषा को जीवंत इतिहास का आईना भी बनाता है।

- **संवादों में सहजता और यथार्थ की गूंज**

  शब्द अब केवल संवाद नहीं रहे, वे धड़कन बन गए हैं–बेहद अपने, बेहद करीब। एक दौर था जब सिनेमा में भाषा शुद्ध साहित्यिक रूप में बहती थी, पर डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स ने इसे रोज़मर्रा की जिंदगी की धड़कन बना दिया। अब स्क्रीन पर नायकों की ज़ुबां में शायराना गंभीरता नहीं, बल्कि वह सहजता झलकती है जो गलियों, चाय की दुकानों और तंग बस्तियों में सुनाई देती है। "स्कैम 1992" का संवाद– "रिस्क है तो इश्क है" –बस एक वाक्य नहीं, बल्कि एक दौर की धड़कन बन गया।

- **हिंग्लिश की लहर और अंग्रेज़ी की छाया**

  हिंदी अब अकेली नहीं, वह संग लिए चल रही है अंग्रेज़ी के कुछ छुए–अनछुए रंग। संवादों में "लेट्स क्रैक इट" और "यू नो व्हाट आई मीन?" जैसी अभिव्यक्तियाँ आम हो गई हैं। " दिल्ली क्राइम," "मेड इन हेवेन," "द फैमिली मैन" –ये शीर्षक प्रमाण हैं कि अब भाषा केवल हिंदी की परिधि में नहीं बंधी, बल्कि बहुभाषीय संस्कृतियों के खुले आकाश में उन्मुक्त उड़ान भर रही है।

- **भाषा का नया सवेरा**

  डिजिटल क्रांति ने हिंदी भाषा को एक नया जीवन दिया है–यह अब केवल संवादों में नहीं बहती, बल्कि भावनाओं में धड़कती है, कहानियों में गूंजती है और हर दर्शक की आत्मा से गहराई से जुड़ती है। यह भाषा अब केवल पढ़ी या सुनी नहीं जाती, बल्कि महसूस की जाती है–कभी किसी ठेठ देसी संवाद में, तो कभी किसी हिंग्लिश अभिव्यक्ति में। यह सफर यहीं नहीं रुकेगा–हर नई वेब सीरीज़, हर नई फिल्म के साथ हिंदी अपने नए रंग खोजेगी, नए सुर सजाएगी, और समय के साथ और भी समृद्ध होती चली जाएगी। जैसे कि गृह मंत्री अमित शाह ने भी अखिल भारतीय सम्मेलन 2024 में कहा , "आने वाला युग हिंदी का होगा।"

3. निष्कर्ष– हिंदी का यह सफर अनंत है...

हिंदी सिनेमा और डिजिटल युग की इस यात्रा में भाषा केवल शब्दों का पुलिंदा नहीं रही–यह समय का साक्षी बनी, समाज की धड़कनों में बसी, और हर पीढ़ी के साथ नया रूप धरती चली गई। कभी यह स्वर्ण युग के सजे–संवरे संवादों में महकी, तो कभी विद्रोह की गूंज में दहाड़ उठी। फिर प्रेम के कोमल स्पर्श में सिहरकर नए युग की हिंग्लिश लहर में बहने लगी। अब यह भाषा स्क्रीन की सीमा से परे, हमारे जीवन के हर कोने में गूंजती है–कभी किसी वेब सीरीज़ के तीखे संवादों में, तो कभी किसी फिल्मी गीत के कोमल सुरों में।

पर सवाल यह नहीं कि हिंदी बदल रही है, सवाल यह है कि यह बदलाव क्या हमें समृद्ध कर रहा है? यदि भाषा समय के साथ बहती है, तो यह प्रवाह ही इसकी शक्ति है। हिंदी अब सीमाओं में नहीं बंधी, बल्कि हर नई अभिव्यक्ति के साथ खिलखिला रही है–बोलियों की मिठास में, हिंग्लिश की सहजता में, और डिजिटल युग की नई संभावनाओं में।

सिनेमा की इस बदलती भाषा ने हमारी अभिव्यक्ति को और गहरा किया है, हमारी कहानियों को नए पंख दिए हैं। यह सफर जारी रहेगा–हर संवाद के साथ, हर स्क्रीन पर झिलमिलाते नए शब्दों के साथ। क्योंकि भाषा कोई स्थिर चित्र नहीं, यह एक बहती नदी है, जो समय के साथ नई राहें बनाती है, नए किनारों को छूती है और अनंत की ओर बढ़ती चली जाती है।

वैभव महाजन
सीआरएल गाजियाबाद

फिल्मों से मेरा जुड़ाव

मैं एक छोटे से उदाहरण के साथ शुरु करना चाहती हूँ। मेरी मातृभाषा कन्नड़ा है और केवल 10 वीं तक ही मैंने तीसरी भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन किया है, उसके बाद हिंदी नहीं थी। लेकिन इतने सालों के बाद भी हिंदी भाषा मेरे दिल में एक विशेष स्थान रखती है, यही कारण है कि आज भी लेख लिखने में मेरी रुचि है। हिंदी भाषा चुम्बक जैसी है, जो हिन्दीतर भाषी को भी अपनी तरफ खींच लेती है। यही हिंदी भाषा की शक्ति है।

हिंदी सिनेमा जिसे बॉलीवुड के नाम से जाना जाता है, ने पूरे भारत और विश्व स्तर पर हिंदी भाषा के प्रचार और लोकप्रियता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी सिनेमा से ही ज्यादातर लोग हिंदी भाषा को पसंद करने लगे, समझने लगे, सीखने लगे, गाना गाने लगे, डायलाग बोलने लगे और बात करना सीखने लगे है।

भारत में विविध क्षेत्रीय भाषाएं हैं, लेकिन हिंदी सिनेमा ने हिंदीतर भाषियों के लिए हिंदी को अधिक परिचित बनाकर एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य किया है। बॉलीवुड हिंदी का सांस्कृतिक राजदूत रहा है। इसने हिंदी को हिन्दीतर लोगों के लिए अधिक सुलभ, सरल और समझने योग्य और सीखने में आसान बना दिया है। हिंदी भाषा तो वर्षों से भी थी। लेकिन लोकप्रियता बॉलीवुड से आई।

बॉलीवुड ने हिंदी को संप्रेषण की आम भाषा बना दिया है और वो आज हमारी आधिकारिक भाषा भी बन चुकी है। दक्षिण भारत और पश्चिम बंगाल जैसे क्षेत्र, जहां हिंदी पहली भाषा नहीं है, बॉलीवुड फिल्मों ने भाषा के प्रति रुचि पैदा कर दी है। लोग हिंदी भाषा भले ही न समझें लेकिन हिंदी गाने और फिल्में जरूर समझते हैं। हिंदी फिल्मी गाने व्यापक रूप से सुने और गाए जाते हैं, जिससे हिंदी शब्द और वाक्यांश दुनिया भर में फैलते हैं इससे ज्यादा प्रगति क्या चाहिए है ना?

हिंदी भाषा को बॉलीवुड के माध्यम से वैश्विक पहचान मिली है, अफगानिस्तान, अफ्रीका, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश फिल्मों के माध्यम से हिंदी से जुड़े रहते हैं और बॉलीवुड फिल्म रिलीज का इंतजार करते हैं। हिंदी गानों और संवादों ने भाषा सीखने में बहुत योगदान दिया है, अगर लोग हिंदी नहीं जानते तो वे भी गाने गा सकते हैं और संवाद आसानी से बता सकते हैं।

यह देखकर खुशी होती है जब लोग हर रोज़ इंस्टाग्राम पर हिंदी गानों पर रील्स बना रहे हैं। हाल ही में मिमी मूवी का "हाय मेरी परम परम परम सुंदरी" गाना सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, ऐसा कोई नहीं था जिसने उस गाने पर रील्स न बनाई हो। हिंदी में कुछ गाने वाकई दिल को छू लेने वाले होते हैं जो हमारी मजेदार यादें ताजा कर देते हैं और कुछ हमें हंसाएंगे और कुछ हमें रुलाएंगे। मेरा पसंदीदा गाना जलेबी फिल्म का "पल एक पल में ही थम सा गया" है। मेरी पसंदीदा फिल्म 'कुछ कुछ होता है' है। मुझे याद है जब मैं छोटी थी, मैंने और माँ ने देर रात तक साथ बैठकर यह फिल्म देखी थी और अंत में दोनों रो रहे होते थे।

कभी गमों को इतना मनाया करो की छोटी छोटी खुशियों को ही भूल जाया करो,
चार दिन की जिंदगी है हर दिन खुलके मुस्कुराया करो,
कभी अलविदा न कहना, हम है राही प्यार के फिर मिलेंगे चलते चलते...

कोमला एल
कार्पोरेट कार्यालय

हिंदी सिनेमा में संगीत– हिंदी भाषा सीखने का एक सशक्त साधन

संगीत हमेशा से ही मानव जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है। भारत में संगीत की महत्ता प्राचीन काल से ही रही है। चाहे खुशी हो या गम, धार्मिक अनुष्ठान हो या, कोई भी संस्कार, भगवान की स्तुति हो या हो युद्ध की धुंधभी, संगीत हर आम व खास अवसर पर प्रयोग में लाया जाता रहा है। पुराणों में भारतवर्ष में संगीत के माध्यम से कहानी कहने के अनूठे तरीकों के भी उदाहरण मिलते हैं। रामायण और महाभारत की गीतमालाएं हमारे अनुष्ठानो में अब भी गाए जाते हैं। शायद यही कारण है कि दर्शकों को रिझाने के लिए शुरू से ही फिल्मों में हिंदी गानों का प्रयोग होता आया है। हिंदी फिल्मों की पृष्ठभूमि में जो संगीत और गाने होते हैं वो कहानी के प्रवाह को और प्रभावी बनाते हैं और दृश्यों से जुड़ी भावनाओं को बढ़ाते हैं जिससे दर्शक आनंदित होते हैं। सर्वेक्षण से यह भी सिद्ध हुआ है कि जब संगीत के माध्यम से सिखाया जाता है तो चीजों को जोड़ना और याद रखना आसान होता है। हिंदी फिल्म संगीत, जो अब दुनिया भर में काफी लोकप्रिय है, पृथ्वी के सभी कोनों में हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है। इस प्रकार हिंदी फिल्म संगीत मनोरंजन के साथ–हिंदी हिंदी सीखने का एक शक्तिशाली माध्यम रहा है इससे न केवल भारतीय ही नहीं बल्कि विदेशी नागरिकों को भी हिंदी सीखने में काफी आसानी हुई है।

भाषा सीखने में संगीत की शक्ति

शोध द्वारा साबित किया जा चुका है कि भाषा सीखने के लिए संगीत सबसे प्रभावी माध्यमों में से एक है। गाने, अपनी दोहरावदार संरचना और धुन के साथ, श्रोताओं के लिए शब्दों, उच्चारण और वाक्य संरचनाओं को याद रखना आसान बनाते हैं। संगीत की लय और ताल भी सीखने वालों को भाषा के पैटर्न को अधिक स्वाभाविक रूप से आत्मसात करने में मदद करती है। गीत व संगीत मानव मस्तिष्क को प्रफुल्लित रखता है तथा हिंदी सिनेमा के गीत, संगीत हमेशा से लोगों को भाते आए हैं।

जहां भाषा सीखने का साधन नहीं है वहां भी हिंदी संगीत रेडियो या दूरदर्शन के माध्यम से पहुँच ही जाती है। जिन्हें हिंदी बोलनी नहीं आती वे भी हिंदी गानों को गुनगुनाते हुए देखे जाते हैं। इसी से हम समझ सकते हैं कि हिंदी सिनेमा के गीत हिंदी भाषा सीखने में कितने सक्षम हैं। हिंदी सीखने वालों के लिए ये गीत व संगीत हिंदी की वर्तनी व शब्दावली को सुदृढ़ करने, सुनने की समझ में सुधार करने और उच्चारण का अभ्यास करने का एक मनोरंजक और आकर्षक तरीका है।

गीतों में अक्सर मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ, बोलचाल की भाषा और सांस्कृतिक संदर्भ होते हैं जो शिक्षार्थियों को भाषा की गहराइयों की समझ प्रदान करते हैं। हिंदी सिनेमा के गीतों के काव्यात्मक बोल और कहानी कहने का मिश्रण उन्हें पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों या औपचारिक भाषा के पाठों की तुलना में अधिक सुलभ और मनोरंजक बनाता है।

बॉलीवुड गाने– शब्दावली का एक समृद्ध स्रोत

हिंदी सिनेमा के संगीत का एक प्रमुख लाभ यह है कि इसके द्वारा व्यक्ति इसकी विस्तृत शब्दावली से परिचित हो जाता है। बॉलीवुड गीतों के बोल अक्सर सरल हिंदी के शब्दों से लेकर अधिक परिष्कृत अभिव्यक्तियों तक की एक विस्तृत श्रृंखला होते हैं। "परिचय" (1972) से "मुसाफ़िर हूँ यारों" या "आनंद" (1970) से "जिंदगी कैसी है पहेली" जैसे गीत अत्यंत भावनात्मक और काव्यात्मक हैं जो विभिन्न प्रकार के भावनाओं और से ओत–प्रोत हैं। ये गहरे भावनात्मक व सांस्कृतिक अर्थों को दर्शाते हैं। इसके अलावा, बॉलीवुड के विभिन्न युगों के गाने शिक्षार्थियों को भाषा के विकास को समझने का भी अवसर प्रदान करते हैं।

उच्चारण और स्वर में सुधार

अहिंदी भाषियों के लिए हिंदी शब्दों का सटीक उच्चारण सबसे बड़ी चुनौती होती है, खासकर भाषा में स्वर संबंधी भिन्नताओं को देखते हुए। बॉलीवुड संगीत शिक्षार्थियों को उनके उच्चारण को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। शिक्षार्थी हिंदी सिनेमा के गानों के साथ गाकर, गायकों के उच्चारण और स्वर की नकल कर सकते हैं, जिससे उनका उच्चारण और भी सटीक व परिशुद्ध हो जाता है।

बॉलीवुड गायकों की अक्सर उनके स्पष्ट उच्चारण के लिए प्रशंसा की जाती है और कई गाने विशेष रूप से भाषा की सुंदरता और लय को उजागर करने के लिए बनाए जाते हैं। गीतों के बोलों में कविता और तुकबंदी का उपयोग शिक्षार्थियों को सही सुर व ताल के उतार–चढ़ाव को समझने की क्षमता में भी योगदान देता है, जो हिंदी में प्रवीणता हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है।

उदाहरण के लिए, महान गायक किशोर कुमार के फिल्म आराधना (1969) के गीत से "मेरे सपनों की रानी" और 'आप की कसम'(1977), फिल्म में से "ज़िंदगी के सफ़र में" न केवल अपनी धुन के लिए यादगार हैं, बल्कि उनके त्रुटिहीन उच्चारण और स्पष्टता के लिए भी प्रसिद्ध है जो अहिंदी भाषियों के लिए हिंदी संबंधी वर्तनी व हिंदी में सटीक उच्चारण को सीखने व समझने का अवसर प्रदान करता है।

"चलते चलते" (पाकीज़ा) का गाना एक शास्त्रीय गीत है जो शिक्षार्थियों को परिष्कृत और गीतात्मक हिंदी से परिचित कराता है।

"जब कोई बात बिगड़ जाए" (जुर्म) का यह उत्कृष्ट हिंदी गीत भावनात्मक अभिव्यक्ति और रिश्तों से संबंधित शब्दावली पर जोर देता है। ये गीत शब्दावली, उच्चारण, अभ्यास और सांस्कृतिक संदर्भों में समृद्ध हैं, जो उन्हें भाषा सीखने वालों के लिए अत्यधिक उपयोगी बनाते हैं।

सांस्कृतिक संदर्भ और मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ

हिंदी गीत अक्सर भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ को दर्शाते हैं, जिनमें मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ, बोलचाल की भाषा और क्षेत्रीय बोलियाँ शामिल होती हैं। ये अभिव्यक्तियाँ अक्सर सीखने वालों के लिए समझना मुश्किल होती हैं, लेकिन भाषा में महारथ हासिल करने और इसकी सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए ज़रूरी हैं। गाने आकर्षक और सुलभ तरीके से हिंदी की इन मुहावरेदार शब्दावली से परिचय कराते हैं।

उदाहरण के लिए, "मिले सुर मेरा तुम्हारा" (1988) न केवल एक देशभक्ति गीत था, बल्कि भारत की भाषाई विविधता का उत्सव भी था। इस गाने में हिंदी, तमिल, बंगाली और पंजाबी सहित कई भाषाओं के बोल हैं, जो इसे भारत की बहुभाषी पहचान को अविस्मरणीय बनाता है। ऐसे गाने शिक्षार्थियों को भारत में बोली जाने वाली विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से परिचित कराते हैं, साथ ही राष्ट्र को एकजुट करने वाले एक सामान्य सूत्र के रूप में हिंदी के महत्व को पुष्ट करते हैं।

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और बॉलीवुड संगीत की बढ़ती पहुँच

यूट्यूब, अमेज़न और एप्पल जैसे डिजिटल प्लैटफ़ॉर्म के उदय ने बॉलीवुड गीतों को पहले से कहीं अधिक सुलभ बना दिया है। अनिवासी भारतीय के साथ–साथ विदेशी नागरिक भी अब हिंदी सिनेमा के संगीत का आसानी से आनंद ले सकते हैं और उससे सीख सकते हैं। नेटफ्लिक्स और अमेज़ॅन प्राइम वीडियो जैसी वैश्विक स्ट्रीमिंग सेवाएँ भी कई भाषाओं में उपशीर्षक प्रदान करके योगदान देती हैं, जिससे शिक्षार्थी फ़िल्म देखते समय गीत के बोलों का अनुसरण कर सकते हैं।

डिजिटल प्लैटफ़ॉर्म पर अनुवाद के साथ गीत की उपलब्धता भाषा सीखने के अनुभव को और बढ़ाती है। कई शिक्षार्थी अब करॉके जैसी संवादात्मक सुविधाओं के माध्यम से अपनी भाषा कौशल को बेहतर बनाने के लिए गीत प्रशिक्षण या बॉलीवुड संगीत को समर्पित वेबसाइटों और ऐप का उपयोग करते हैं, जहाँ वे गाने के साथ गा सकते हैं और वास्तविक समय में अपने उच्चारण का अभ्यास कर सकते हैं।

निष्कर्ष

मनोरंजन के एक पहलू के रूप में हिंदी सिनेमा में संगीत अपनी भूमिका से कहीं आगे निकल गया है। यह भाषा सीखने के एक सशक्त साधन के रूप में कार्य करता है, जो लोगों को हिंदी सीखने का एक मजेदार, आकर्षक और प्रभावी तरीका प्रदान करता है। शब्दावली और उच्चारण को बढ़ाने से लेकर सांस्कृतिक संदर्भ और मुहावरेदार अभिव्यक्ति प्रदान करने तक, बॉलीवुड गीतों में हिंदी के बोल सीखने में सहायता प्रदान करने की एक अनूठी क्षमता है।

जैसे–जैसे हिंदी सिनेमा वैश्विक स्तर पर फल–फूल रहा है, वैसे–वैसे हिंदी भाषा का भी वैश्विक रूप से प्रचार–प्रसार बढ़ा है। बॉलीवुड सिनेमा के गीत व संगीत सभी व्यक्तियों को आकर्षित करता है क्योंकि इसका संगीत अधिकतर लोगों को प्रिय है। अत: इससे हिंदी भाषा को सीखने को भी बल मिलता है। चाहे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म हो या आकस्मिक गाने सुनने के माध्यम से, हिंदी फिल्मों का संगीत हिंदी सीखने वालों के लिए आनंददायक और सार्थक तरीके से हिंदी से जुड़ने का एक स्थायी और सुलभ तरीका बनाता आया है और आगे भी रहेगा।

स्नेहा गुप्ता
सीआरएल गाजियाबाद

महत्वपूर्ण रक्षा–इलेक्ट्रॉनिकी शब्दावली जानें...

अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द
Accentuator	पूर्व प्रबलक
Accumulation	संचयन
Aerial object	हवाई वस्तु
Aeromagnetic	वायुचुंबकीय
Air surveillance radar	हवाई चौकसी रेडार
Argon laser	आर्गन लेज़र
Back pressure	पश्च दाब
Back tilting	पश्च झुकाव, पश्च अभिनति
Background noise	पृष्ठभूमिक रव
Backing store	सहायक संग्रह, सहायक भंडार
Balanced detector	संतुलित संसूचक
Ballistic missile defence	प्राक्षेपिक प्रक्षेपास्त्र रक्षा
Band gap	बैंड अंतराल
Barograph	वायुदाब लेखी
Barometer effect	बैरोमापी प्रभाव
Bifocal	द्विफोकसी
Bifurcation	द्विशाखन
Call drop ratio	कॉल ड्रॉप अनुपात
Call forward	कॉल अग्रेषण
Cambric	किमरिख, दुकूल
Camouflage	छद्म आवरण
Cartridge	कारतूस, कार्ट्रिज
Cascade	सोपानी, कैसकेड
Ceilometer	सीलोमीटर
Celestial body	खगोलीय पिंड
Declination	अवनति
Decode	विकोडन
Dehydrator	निर्जलित्र
De-icing	विहिमन, विबर्फन
Demodulator	विमाडुलक

हिंदी सिनेमा – भाषा और संस्कृति का सशक्त प्रचारक

भाषा किसी भी समाज की सांस्कृतिक और बौद्धिक पहचान का आधार होती है और उसके प्रचार–प्रसार में विभिन्न माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी अनेक माध्यमों का योगदान रहा है, जिनमें हिंदी सिनेमा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहाँ विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, हिंदी सिनेमा ने न केवल मनोरंजन का साधन प्रदान किया है, बल्कि बीसवीं शताब्दी की शुरुआत से ही हिंदी भाषा को संचार, संस्कृति और साहित्य के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने में भी अतुलनीय भूमिका निभाई है। हिंदी सिनेमा भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और इसकी जड़ें हमारे समाज में गहरी समाई हुई हैं। सिनेमा की पहुंच केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह विदेशों में भी भारतीय संस्कृति और भाषा का प्रतिनिधित्व करता है।

हिंदी सिनेमा – भाषा और संस्कृति का दर्पण

हिंदी सिनेमा ने भाषा को न केवल संचार का माध्यम बनाया, बल्कि इसे जन–जन तक पहुँचाने का कार्य भी किया। हिंदी सिनेमा की शुरुआत 1913 में दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्मित पहली मूक फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" से हुई थी। उस समय तक संवादों का कोई स्थान नहीं था, लेकिन 1931 में बनी पहली सवाक (बोलने वाली) फ़िल्म आलम आरा ने हिंदी भाषा को फिल्मों में एक सशक्त माध्यम बना दिया। इसके बाद फिल्मों में प्रयुक्त संवाद, गीत, कविताएं और मुहावरे आम बोलचाल में स्थान पाते गए। जैसे–जैसे हिंदी सिनेमा लोकप्रिय हुआ, वैसे–वैसे हिंदी भाषा का प्रभाव भी बढ़ता गया।

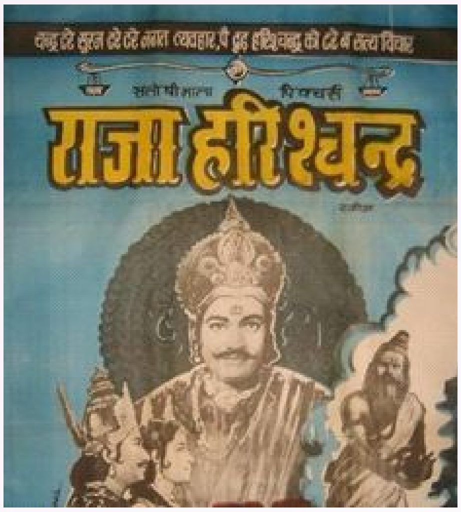

हिंदी फिल्मों में जो संवाद बोले जाते हैं, वे लोगों की दैनिक भाषा में घुल–मिल गए हैं। उदाहरण के लिए, "डॉन को पकड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है" या "बाबू मोशाय, ज़िंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं" जैसे संवाद आम बोलचाल में प्रयोग किए जाते हैं। इस प्रकार हिंदी सिनेमा भाषा को जनसामान्य के करीब लाने में सहायक रहा है।

1. हिंदी को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना

हिंदी सिनेमा का प्रभाव केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह दक्षिण भारत, पूर्वोत्तर और ग्रामीण भारत के दूरदराज़ के इलाकों तक पहुँचा। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता ने इसे एक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित किया। दक्षिण भारत, बंगाल, पंजाब और पूर्वोत्तर भारत में भी हिंदी सिनेमा की लोकप्रियता ने हिंदी भाषा को अधिक स्वीकार्यता दिलाई।

दक्षिण भारत के अभिनेता जैसे रजनीकांत, कमल हासन, प्रभास आदि ने भी हिंदी फिल्मों में काम किया, जिससे हिंदी भाषा उन क्षेत्रों में भी प्रसिद्ध हुई जहाँ यह मुख्य भाषा नहीं थी।

2. हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता

हिंदी सिनेमा ने एक सरल और जनप्रिय भाषा को अपनाया, जिससे यह आम जनता की भाषा बन गई। हिंदी फिल्मों के संवाद, गीत, और पटकथा ने हिंदी भाषा के प्रति लोगों में रुचि जगाई। कई ऐसे लोग, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी, वे हिंदी फिल्मों को देखकर हिंदी बोलना और समझना सीखने लगे।

3. लोकप्रिय संवादों और गीतों के माध्यम से हिंदी का प्रचार

हिंदी सिनेमा की फिल्मों में प्रयुक्त संवाद आम जनता की भाषा को प्रतिबिंबित करते हैं। 1950 और 1960 के दशक में, राज कपूर, दिलीप कुमार और देव आनंद की फिल्मों में हिंदी भाषा का अत्यधिक प्रभाव था। "मुगल–ए–आज़म" और "प्यासा" जैसी फिल्मों में हिंदी संवादों ने लोगों के दिलों में एक गहरी छाप छोड़ी। शोले फिल्म का "अरे ओ सांभा!" या "बाबू मोशाय" जैसे संवाद आम बोलचाल का हिस्सा बन गए।

फिल्मों में प्रयुक्त हिंदी गीतों ने भाषा के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गीतों में प्रयुक्त सरल और मधुर हिंदी शब्दावली लोगों को हिंदी से जोड़ती है। 1950 से 1980 के दशक तक, शंकर–जयकिशन, लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल और आर. डी. बर्मन जैसे संगीतकारों द्वारा रचित गीतों ने हिंदी को जन–जन तक पहुँचाया। "मेरे देश की धरती", "ऐ मेरे वतन के लोगों" और "जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया" जैसे देशभक्ति गीतों ने हिंदी भाषा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। आज भी हिंदी गाने भारत के साथ–साथ विदेशों में भी सुने और सराहे जाते हैं।

4. ग्रामीण और शहरी हिंदी भाषा को जोड़ने का कार्य

हिंदी सिनेमा ने ग्रामीण और शहरी हिंदी के बीच न केवल सेतु का कार्य किया है, बल्कि इसमें उर्दू और अन्य भाषाओं के शब्दों को मिलाकर एक समृद्ध भाषा का विकास किया है। फिल्मों में प्रयुक्त हिंदी भाषा ने विभिन्न बोलियों को एक मंच दिया और हिंदी को एक सामान्य भाषा के रूप में विकसित किया। उदाहरण के लिए, गंगा जमुना फिल्म में अवधी का प्रयोग हुआ, तो मुगल–ए–आजम, पाकीज़ा और उमराव जान में उर्दू मिश्रित हिंदी ने अपनी छाप छोड़ी।

हिंदी सिनेमा के माध्यम से हिंदी के वैश्विक प्रचार–प्रसार में योगदान

1. विदेशों में हिंदी भाषा की लोकप्रियता

हिंदी फिल्में केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी देखी जाती हैं। 1990 के दशक के बाद, "दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे", "कुछ कुछ होता है", "लगान" और "गंगाजल" जैसी फिल्मों ने हिंदी भाषा को विदेशों तक पहुँचाकर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने में मदद की है।

रूस, चीन, मध्य एशिया, अफ्रीका, अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों में हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता के कारण वहाँ के लोगों ने हिंदी भाषा को अपनाकर हिंदी भाषा को वैश्विक पहचान दिलवाई है।

2. गैर–हिंदी भाषी भारतीयों में हिंदी का प्रचार

प्रवासी भारतीयों के बीच हिंदी को जीवंत बनाए रखने में हिंदी सिनेमा की अहम भूमिका रही है। अन्य देशों में बसे प्रवासी भारतीय हिंदी सिनेमा के माध्यम से अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़े रहते हैं।

3. डबिंग और सबटाइटल्स के माध्यम से हिंदी का विस्तार

आजकल हिंदी फिल्मों को विभिन्न भाषाओं में डब किया जाता है, जिससे अन्य भाषाओं के लोग भी हिंदी शब्दों से परिचित होते हैं। इसके अलावा, सबटाइटल्स भी हिंदी को पढ़ने और समझने का अवसर प्रदान करते हैं। डबिंग और सबटाइटल्स के माध्यम से हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा को गैर–हिंदी भाषी क्षेत्रों में पहुँचाया, जिससे हिंदी को समझने और बोलने वालों की संख्या बढ़ी।

हिंदी सिनेमा और हिंदी साहित्य का संबंध

प्रेमचंद, हरिवंश राय बच्चन, साहिर लुधियानवी, गुलजार और जावेद अख्तर जैसे साहित्यकारों की कृतियों को फिल्मों में स्थान मिला, जिससे साहित्य और हिंदी भाषा को भी बढ़ावा मिला।

साहित्य आधारित फिल्मों, जैसे तीसरी कसम (फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर आधारित), सत्यकाम (नारायण सुरेश की रचना पर आधारित), गाइड (आर. के. नारायण के उपन्यास पर आधारित) ने हिंदी भाषा और साहित्य को नए दर्शकों तक पहुँचाया।

नवीन तकनीकों और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से हिंदी का विस्तार

आज डिजिटल युग में हिंदी फिल्मों के ओटीटी प्लेटफॉर्म्स (नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम, हॉटस्टार आदि) पर उपलब्ध होने से हिंदी फिल्में और वेब सीरीज़ वैश्विक दर्शकों तक पहुँच रही हैं। हिंदी वेब सीरीज़ और यूट्यूब पर उपलब्ध हिंदी कंटेंट ने हिंदी को डिजिटल माध्यम में भी सशक्त बनाया है।

समाज और युवा पीढ़ी पर प्रभाव

आज की युवा पीढ़ी सोशल मीडिया और पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हो रही है, लेकिन हिंदी फिल्मों ने हिंदी भाषा को उनके बीच जीवंत बनाए रखा है। वे फ़िल्मी गानों, संवादों और वेब सीरीज के माध्यम से हिंदी से जुड़े रहते हैं। हिंदी वेब सीरीज़ और फ़िल्में, जैसे "मिर्जापुर," "पंचायत" और "सेक्रेड गेम्स," नई पीढ़ी के बीच हिंदी भाषा को और मजबूत कर रही हैं।

हिंदी सिनेमा और हिंदी भाषा की चुनौतियाँ

हालाँकि हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा के प्रचार में बड़ा योगदान दिया है, लेकिन आज के समय में इसमें कुछ चुनौतियाँ भी देखने को मिलती हैं। आजकल की फिल्मों में अंग्रेज़ी संवादों और मिश्रित भाषा का प्रयोग अधिक बढ़ रहा है। कई फिल्में अब "हिंग्लिश" (हिंदी+अंग्रेज़ी) भाषा में बनाई जाती हैं, जिससे शुद्ध हिंदी संवादों की संख्या कम हो रही है और शुद्ध हिंदी कहीं न कहीं पीछे छूटती जा रही है ।

इसके अलावा, कुछ निर्देशक और अभिनेता हिंदी की बजाय अंग्रेज़ी में संवाद देने को प्राथमिकता देने लगे हैं। यदि इस प्रवृत्ति को नियंत्रित नहीं किया गया, तो हिंदी भाषा का महत्व धीरे–धीरे कम हो सकता है।

हिंदी सिनेमा द्वारा और अधिक योगदान देने के प्रयास

हिंदी भाषा के प्रचार को और अधिक बढ़ावा देने के लिए हिंदी सिनेमा को कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे जैसे–

1. शुद्ध हिंदी संवादों का उपयोग – फिल्मों में हिंदी भाषा को प्रमुखता दी जानी चाहिए ताकि लोग शुद्ध हिंदी बोलने और समझने के लिए प्रेरित हों।
2. साहित्यिक हिंदी का समावेश – फिल्मों में हिंदी साहित्य की कृतियों पर आधारित कहानियों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिससे लोग हिंदी साहित्य से भी परिचित हों।
3. दुनिया भर में हिंदी फिल्म महोत्सवों का आयोजन – अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी फिल्मों को बढ़ावा देने के लिए हिंदी फिल्म महोत्सव आयोजित किए जाने चाहिए।
4. डबिंग और उपशीर्षक – हिंदी फिल्मों को अन्य भाषाओं में डब करने के साथ–साथ हिंदी उपशीर्षक भी दिए जाने चाहिए ताकि हिंदी भाषा का भी विस्तार हो।

निष्कर्ष

हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी सिनेमा न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि हिंदी भाषा और संस्कृति का एक सशक्त प्रचारक भी है। बदलते दौर में यह न केवल डिजिटल माध्यमों के साथ हिंदी भाषा को और भी अधिक प्रभावी बना रहा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी हिंदी भाषा को पहचान दिला रहा है। हिंदी फिल्मों के संवाद, गीत, कहानियाँ और पात्र आम जनता के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। हालाँकि, बदलते समय के साथ कुछ चुनौतियाँ भी आई हैं, लेकिन यदि हिंदी सिनेमा भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास करे, तो यह हिंदी भाषा को और अधिक ऊँचाइयों तक ले जाकर आने वाली पीढ़ियों तक हिंदी की समृद्ध धरोहर को बनाए रखने में सफल रहेगा।

नीतिका सरीन
गाज़ियाबाद यूनिट

क्या आप जानते हैं / Did you know?

प्रत्येक नगर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) गठित होती है जो राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संचालित होती है। इस समिति की बैठक छह महीने में एक बार होती है (वर्ष में 02 बार)। इस बैठक में यूनिट/कार्यालय प्रमुख का भाग लेना अनिवार्य होता है।

There is Town Official Language Implementation Committee (TOLIC) in every city which is controlled by Dept. of OL, MHA. It conducts one meeting in 6 months (i.e. twice in a year). Unit / Office Head should invariably attend its meetings.

हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाता हिंदी फिल्मी गीत–संगीत

हिंदी फिल्मी गीत, जिन्हें औपचारिक रूप से हिंदी गीत या फिल्मी गीत के रूप में जाना जाता है और अनौपचारिक रूप से बॉलीवुड संगीत के रूप में जाना जाता है, हिंदी फिल्मों में दिखाए जाने वाले गीत हैं।भारतीय फिल्मों में आम गीत–नृत्य से उत्पन्न, नृत्य के साथ बॉलीवुड गीत हिंदी सिनेमा की एक विशेषता है जो इसे लोकप्रिय, सांस्कृतिक मूल्य और संदर्भ देता है। हिंदी फिल्म गीत भारतीय पॉप संगीत का एक प्रमुख घटक बनाते हैं, और शास्त्रीय और आधुनिक दोनों स्रोतों से अपनी प्रेरणा प्राप्त करते हैं।हिंदी फिल्मों के गीत अब उत्तर भारत की लोकप्रिय संस्कृति में दृढ़ता से शामिल हैं और उत्तर भारत में बाजारों, दुकानों, बस और ट्रेन की यात्रा के दौरान खूब सुने–सुनाए जाते हैं। हालांकि हिंदी फिल्मों में नियमित रूप से कई गीत और कुछ नृत्य शामिल होते हैं, लेकिन पश्चिमी थिएटर के अर्थ में वे संगीत नहीं हैं, संगीत–गीत–नृत्य पहलू कथानक, संवाद और अन्य मापदंडों के समान शैली की एक अभिन्न विशेषता है।

बॉलीवुड/हिंदी संगीत की शुरुआत (1930 – 1950)

हिंदी सिनेमा का विकास शायद अपने गीतों के माध्यम से सबसे सटीक रूप से देखा जा सकता है। ध्वनि के आगमन के बाद से, लोकप्रिय हिंदी सिनेमा ने गीत को अपने ऑन–स्क्रीन सार्वभौम रूप में प्रमुखता दी है। बॉलीवुड संगीत का जन्म 1931 में भारत की पहली ध्वनि मोशन फिल्म, अर्देशिर ईरानी द्वारा आलम आरा के आगमन के साथ हुआ था, जिसमें सात गीत थे। इसी समय नई संगीत शैली के बीज बोए गए थे। इस फिल्म के बाद जमशेदजी फ्रेमजी मदन की शिरीन फरहाद (1931) आई जिसमें ओपेरा की तरह 42 गानों को एक साथ दिखाया गया था।

1931 और 1940 के बीच, भारत ने प्रति फिल्म औसतन दस गानों के साथ लगभग 930 फीचर फिल्मों का निर्माण किया। इस अवधि के दौरान, कई अभिनेताओं और अभिनेत्रियों ने हॉलीवुड के समान गीत गाए। हालांकि, '40 और '50 के दशक के दौरान, व्यवसाय बड़े मोशन पिक्चर स्टूडियो से दूर स्वतंत्र निर्माताओं की ओर स्थानांतरित होना शुरू हो गया। चूंकि अधिकांश अभिनेता जो गा सकते थे वे बड़ी मोशन पिक्चर्स के लिए काम करते थे जो स्वतंत्र निर्माताओं से अधिक भुगतान करते थे, इस अवधि के परिणामस्वरूप एक नई अवधारणा की शुरुआत हुई जिसे पार्श्व गायन (प्लेबैक सिंगिंग) कहा जाता था।

बॉलीवुड या हिंदी फिल्म संगीत ने अपनी संक्रामक धुनों, संबंधित विषयों और पश्चिमी प्रभावों के साथ भारतीय परंपराओं के सांस्कृतिक फ्यूजन के कारण वैश्विक लोकप्रियता हासिल की है। कुछ गीत सीमाओं को पार कर गए हैं और सांस्कृतिक गीत बन गए हैं जो सभी महाद्वीपों के श्रोताओं को जोड़ते हैं। यह संगीत शैली भारतीय शास्त्रीय संगीत, पॉप, जैज, रॉक और अन्य संगीत रूपों का मिश्रण है, जिससे यह विविध दर्शकों को आकर्षित करती है। बॉलीवुड संगीत की वैश्विक लोकप्रियता सांस्कृतिक प्रभावों, संबंधित विषयों, मनभावन धुनों और व्यापक प्रदर्शन के अपने अनूठे मिश्रण से पैदा होती है। यह वैश्विक संगीत उद्योग में एक महत्वपूर्ण ताकत बनी हुई है, सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देती है और सीमाओं के पार श्रोताओं को जोड़ती है।

बॉलीवुड फिल्मों और संगीत का आपस में जुड़ा इतिहास

एक अलग उद्योग न होने के परिणामस्वरूप, भारतीय संगीत उद्योग पर भारत सरकार द्वारा अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है। वास्तव में, एड पेटो के लेख "अंतरिम अर्थव्यवस्था – भारत के डिजिटल संगीत उद्योग का परिचय" के अनुसार, "भारत के रिकॉर्ड किए गए संगीत उद्योग ने 2016 में प्रति व्यक्ति केवल 0.09 अमेरिकी डॉलर का व्यापार राजस्व उत्पन्न किया, जिससे यह वर्तमान में सबसे खराब मुद्रीकृत संगीत बाजार बन गया।" ऐसा इसलिए है क्योंकि सरकार ने अभी तक लाइसेंसिंग, कॉपीराइट, प्रकाशन आदि के आसपास उचित प्रावधान नहीं बनाए हैं जो फिल्म उद्योग के बाहर के कलाकारों, संगीत रचनाकारों, गीतकारों और संगीत निर्माताओं के लिए फायदेमंद होते।

सांस्कृतिक प्रभाव

भारतीय सिनेमा, अपने विशिष्ट फ़िल्म संगीत के साथ, न केवल पूरे भारतीय समाज में फैला है, बल्कि दुनिया भर में भारत की संस्कृति के प्रसार में भी सबसे आगे रहा है। कई बॉलीवुड गानों ने भारत के बाहर भी काफ़ी प्रसिद्धि और पहचान हासिल की है, जो अक्सर दुनिया भर के अलग–अलग दर्शकों को पसंद आते हैं। यहाँ विभिन्न युगों के कुछ उल्लेखनीय उदाहरण दिए गए हैं–

- रूस, चीन, तुर्की, जापान और मध्य पूर्व तथा अफ्रीका के कई देशों में – आवारा (1951) का "आवारा हूँ" और श्री 420 (1955) का "मेरा जूता है जापानी"– राज कपूर का करिश्मा मशहूर था और फ़िल्म की लोकप्रियता, ख़ास तौर पर सोवियत संघ और दूसरे साम्यवादी देशों में, ने इस गाने को मशहूर बना दिया। इसकी सरल, उदासी भरी धुन दर्शकों को पसंद आई।
- इजराइल में – श्री 420 (1955) से "इचक दाना बिचक दाना", श्री 420 से ही राज कपूर और बच्चों की विशेषता वाला यह चंचल गीत इजराइल जैसे स्थानों में आश्चर्यजनक स्तर पर मान्यता प्राप्त है, कथित तौर पर रूसी प्रवासियों के बीच राज कपूर के लिए प्रशंसा के कारण।
- फ्रांस में, बैंड लेस रीटा मित्सुको ने "ले पेटिट ट्रेन" के लिए अपने संगीत वीडियो में बॉलीवुड प्रभावों का उपयोग किया और फ्रेंच गायक पास्कल ऑफ बॉलीवुड ने "जिंदगी एक सफर है सुहाना" जैसे गीतों को शामिल करके फिल्मी संगीत को लोकप्रिय बनाया।
- चीन में – डिस्को डांसर (1982) से "आई एम ए डिस्को डांसर"– विजय बेनेडिक्ट द्वारा गाया गया मिथुन चक्रवर्ती का ऊर्जावान नृत्य सोवियत संघ और यहां तक कि चीन में भी बहुत हिट हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि तत्कालीन सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचेव ने भारत की यात्रा के दौरान मिथुन और इस गीत के लिए अपने और अपनी बेटी के स्नेह का उल्लेख किया था।
- चीन में कोविड लॉकडाउन के कारण अपने घरों में फंसे कई लोग अपना विरोध दर्ज कराने के लिए बॉलीवुड के एक गाने का सहारा ले रहे हैं – मिथुन चक्रवर्ती अभिनीत 'डिस्को डांसर' का गाना 'जिमी, जिमी'। इस विशेष गाने का उपयोग करने का कारण यह है कि मंदारिन में 'जी मी' का अर्थ है "मुझे चावल दो", जो लॉकडाउन में कई लोगों द्वारा सामना की जा रही कमी को दर्शाता है।
- इंग्लैंड में – ब्रिटिश नाटककार सुधा भूचर ने एक हिंदी फिल्म हिट हम को हिंदी में बदल दिया। हम आपके हैं कौन. . ! को हिट म्यूजिकल "फोर्टीन सॉन्ग्स" में बदल दिया गया, जिसे ब्रिटिश दर्शकों ने खूब सराहा।
- अकादमी पुरस्कार (विश्वव्यापी)– 2009 की फिल्म स्लमडॉग मिलियनेयर के लिए रहमान द्वारा रचित गीत "जय हो" सर्वश्रेष्ठ मूल स्कोर और सर्वश्रेष्ठ मूल गीत श्रेणियों में अकादमी पुरस्कार जीतने वाला पहला हिंदी गीत बना।
- कुछ भारतीय फिल्में चीन में भी बहुत लोकप्रिय हैं, जिनमें 1950 और 60 के दशक में राज कपूर की फिल्मों से लेकर हाल ही में आई "3 इडियट्स", "सीक्रेट सुपरस्टार" और "दंगल" जैसी फिल्में शामिल हैं।

संगीत स्ट्रीमिंग सेवाओं का उदय

भारत में संगीत की व्यापक खपत भी दुनिया के अन्य हिस्सों में संगीत उद्योगों से काफी अलग रही है। भारतीय संगीत उद्योग में बड़े पैमाने पर बॉलीवुड साउंडट्रैक का दबदबा है, जो देश के संगीत राजस्व का लगभग 80% हिस्सा है। 2000 के दशक में ऑनलाइन स्ट्रीमिंग (सीडी और डिजिटल डाउनलोड को दरकिनार करते हुए) में बदलाव से पहले, 1980 और 1990 के दशक में उद्योग पर कैसेट टेप का दबदबा था। पिछले चार वर्षों में उभरे शीर्ष डिजिटल संगीत सेवा प्रदाता हैं – जियोसावन, गाना, विंक म्यूजिक, स्पॉटिफाई और गूगल प्ले म्यूजिक जो भारतीय संगीत के साथ–साथ हिंदी भाषा का भी खूब प्रचार कर रहे हैं।

ऋतु लाम्बा
अपर कंपनी सचिव

क्या आप जानते हैं / **Did you know?**

संसदीय राजभाषा समिति, रक्षा उत्पादन विभाग के अधिकारियों और गृह मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा समय–समय पर राजभाषाई निरीक्षण किए जाते हैं। ऐसे निरीक्षणों की समय–अवधि निश्चित नहीं होती।

We are subject to OL inspections by Parliamentary Committee, Officials from DDP and MHA from time to time. There is no periodicity fixed for such inspections.

बारिश की बूँद

बारिश की कोमल बूँद हूँ मैं
सबको जीवन देती हूँ
सावन की रिम–झिम फुहार से
सबका मन मोह लेती हूँ ।

जो बरसूँ मैं झूम के
तो लहराती है फसलें, ताल पोखर खिलखिलाते हैं ।

प्यासी धरा की प्यास बुझाती हूँ
बारिश की कोमल बूँद हूँ मैं
सबको जीवन देती हूँ
नदी में जब मैं मिलती हूँ, बल खाके इतराती हूँ,
सागर में जब मैं मिलती हूँ, विशालता उसे दिलाती हूँ ।

पर ऐ मानव प्रकृति से खिलवाड़ न कर,
अपने पर ज्यादा नाज न कर,
जिस तरह तू प्रदूषण फैला रहा,
प्लास्टिक और कचरा बिखरा रहा,
इस कारण अतिवृष्टि और तबाही देख रहा ।

बूँद फिर कहती है
पर ऐ मानव प्रकृति से खिलवाड़ न कर,
अपने पर ज्यादा नाज न कर ।
यदि मैं अपने पर आ गई,
फिर तू न कहीं टिक पायेगा ।
तू देख रहा प्रवाह मेरा विकराल,
धरा को लील रहा,
त्राहि–त्राहि तू देख रहा है,
पर फिर भी तू न सुधर रहा
मैं रिमझिम बरसी तो जीवन हूँ,
अतिवृष्टि हुई तो काल हूँ,

मैं कोमल हूँ मुझे कोमल ही रहने दे
प्रकृति को न छेड़ उसे भी जीने दे
बारिश की कोमल बूँद हूँ मैं,
मुझको कोमल ही रहने दे ॥

संध्या पंत
क्षे. का. दिल्ली

हिंदी सिखाती मीडिया

सिनेमा, मीडिया और हिंदी का नाता बहुत पुराना हैं जैसे हिंदी हिंदुस्तान की जान हैं वैसे ही हिंदुस्तान में हिंदी के बगैर सिनेमा और मीडिया की कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं। मीडिया ने हिंदी के प्रचार प्रसार मे अहम भूमिका निभाई हैं। हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में सिनेमा और मीडिया ने हिंदी को जीवनदान दिया हैं। आज किसी विदेशी को भी यदि ,व्यापार, मीडिया, सिनेमा आदि वर्ग को अपना प्रचार करना होता हैं उन्हें भी हमारी हिंदी का सहारा लेना ही पड़ता हैं, क्योकि अधिकतर लोग सहज,सरल व सुबोध हिंदी भाषा को जानते समझते और बोलते हैं। मीडिया के जरिए हिंदी की पठन सामग्री, समाचार, फिल्म, टेलीविज़न, रेडियो कार्यक्रम और सोशल मीडिया, इंटरनेट इत्यादि से हिंदी का प्रचार–प्रसार होता हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति ने कहा था– यदि भारत को समझना हैं तो "हिंदी सीखो,"

भारत मेरी माता हैं,सिनेमा मेरा भाई हैं और मीडिया मेरी बहन।

हिंदी से ही जुड़ा हैं,इन सबका नाता मीडिया की कहानी उतनी ही पुरानी है ,जितनी मानव जाति।

किसी ने सच ही कहा है कि "मीडिया ऐसा टकसाल हैं जहाँ भाषा गढ़ती व सृजित होती हैं।" सर्वप्रचलित एवं व्यवहार कुशल हिंदी ही संपर्क भाषा का रूप ले सकती है। न कि व्याकरणिक एवं साहित्यिक भाषा। मीडिया ही हिंदी भाषा के माध्यम से लोगों को प्रत्येक क्षेत्र खेल, संगीत, व्यापार, खबर, नाटक आदि की जानकारी प्रदान कर रही हैं, जिससे लोगों को घर बैठे–बैठे प्रत्येक क्षेत्र की जानकारी प्राप्त हो रही हैं। इस प्रकार मीडिया हिंदी के विकास में भारत को एक सशक्त शक्ति के रूप में उभार रहा हैं। नि:संदेह आज हिंदी रूपी नन्हा पौधा न केवल भारत देश के कोने कोने में वरन संपूर्ण धरा पर वटवृक्ष की भांति अपनी जड़े फैलाकर गहरी पैठ करने में सफल रहा हैं।

एक जमाना था जब स्मार्ट मोबाइल फोन व इंटरनेट सुविधा कम थी और ज़्यादातर सभी काम अंग्रेजी में हुआ करता था। जिस प्रकार वक़्त ने करवट ली अब शहर हो या गाँव हो या देश का कोई कोना सभी जनमानस के हाथ में स्मार्ट मोबाइल फोन व इंटरनेट की सुविधा हो गई हैं। मोबाइल बनाने वाले ने भी नए हिंदी सॉफ्टवेयर तैयार किए हैं व इंटरनेट पर भी हिंदी में काफी काम किया गया हैं। इंटरनेट पर हम देखते हैं कि हिंदी कि बहुत सी वेबसाइट हैं जिनमें हिंदी के अधिकतर साहित्यकारों की जीवनी, काव्य रचना, नाटक, कहानी, प्रेरणादायक कहानी, रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान, गीत संगीत इत्यादि आसानी से हिंदी मे मिल जाते हैं। देश हो या विदेश हो उसकी भौतिक परिस्थिति या कोई भी घटना' या उससे संबन्धित कोई भी जानकारी भी हिंदी में उपलब्ध हैं। अब घर बैठे किसी भी तीर्थ स्थान के दर्शन व जानकारी हिंदी में प्राप्त कर सकते हैं और घर बैठे ही कोई पूजा पाठ व अनुष्ठान में भाग ले सकते है। ऑनलाइन व ऑफलाइन पढ़ाई व कार्यालय, लेनदेन के काम भी हिंदी में घर बैठे ही कर सकते हैं , इसके साथ ही अधिकतर जनमानस नेट पर हिंदी में काम करना सीख रहा हैं। यह सर्व विदित हैं कि विगत कुछ वर्षों से सरकार वृक्ष बचाओ अभियान के तहत सभी संस्थानों में कागज के उपयोग को कम करने हेतु व पर्यावरण को हरित क्रांति की ओर आकर्षित करने हेतु व्यापक अभियान मीडिया के माध्यम से कर रही हैं। आज बाज़ार में प्रसारित विज्ञापनों पर मनन करें तो देखेगे कि स्वास्थ्य, जीवन बीमा, अंगदान जैसे अहम मुद्दों व नवयुवकों को नशाखोरी की गिरफ्त से छुटकारा पाने व यातायात के नियमों का पालन कराने हेतु मीडिया का प्रयोग किया जा रहा हैं। संवेदनशील मुद्दों को प्रचारित–प्रसारित करने व लोगों को सचेत करने में व आकर्षित करने में विज्ञापन कंपनियाँ व सरकार हिंदी भाषा का ही अधिक प्रयोग कर रही हैं क्योकि हिंदी भाषा में गुंथित वाक्य विन्यास एवं संवाद भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक रूप से मानव मात्र के ह्रदय के अंतस को छूने में अत्यंत कारगर सिद्ध होते हैं। ठीक इसी तरह लोगों को इलाज की सुविधा ऑफलाइन व ऑनलाइन मीडिया के द्वारा दी जा रही हैं। लोगों को कम समयावधि में इलाज व लैबटेस्ट की घर बैठे ही सुविधा मिल जाती हैं।

मीडिया के जरिए हिंदी के प्रचार –प्रसार के कुछ तरीके–

1. फिल्म और टेलीविज़न– दुनिया भर में भारतीय फिल्मों और टेलीविज़न कार्यक्रम देखे जाते हैं। पहली भारतीय फिल्म 1913 मे बनी थी, जिसकी नींव दादा साहेब फालके ने डाली थी। सन1931 मे भारतीय हिंदी फिल्मों ने बोलना शुरू कर दिया था।

2. सोशल मीडिया– सोशल मीडिया पर हिंदी में पोस्ट करने से बड़े से समुदाय तक अपनी बात पंहुचाई जा सकती हैं। फ़ेसबुक, टिवीटर, व्हाटसअप व मसेंजर से विडियो कॉल व संदेश (जन्मदिन, शोक संदेश, विवाह के निमंत्रण इत्यादि) को हिंदी में बोलकर व लिखकर बड़े से समुदाय व परिवार जन तक अपनी बात पंहुचाई जा सकती हैं।

3. इंटरनेट– इंटरनेट पर हिंदी की पठन सामग्री, समाचार और जानकारी आसानी से मिल जाती हैं।

4. मोबाइल– मोबाइल में भी हिंदी का इस्तेमाल होता है।

5. सॉफ्ट वेयर– यूनीकोड, सी–डैक, बराहा, अक्षर,कृतिदेव जैसे सॉफ्ट वेयर की मदद से अंग्रेजी की–बोर्ड पर हिंदी टाइप की जा सकती हैं।

6. हिंदी साहित्य– नए नए रचनाकार, लेखक सोशल मीडिया के जरिए अपनी रचनाएँ जन जन तक पहुंचा रहे हैं।

7. पत्र –पत्रिकाएँ– पत्रकारों ने हिंदी पत्रकारिता के जरिये हिंदी का प्रचार प्रसार किया हैं।

सरकारी और व्यक्तिगत प्रयासों से आज यह बोलते हुए अत्यंत हर्षानुभूति होती हैं कि आज हमें हिंदी भाषी कहलाने मे किसी प्रकार की हीन भावना का अनुभव नहीं होता क्योकि अब मीडिया ने भारत की हिंदी भाषा का सम्पूर्ण धरा पर विस्तारिकरण कर भाषा को गौरव और सम्मान प्रदान किया है।

आज सूचना और प्रौद्यगिकी व भूमंडलीकरण के दौर मे राष्ट्र का विराट पुरुष जाग उठा है। नई सुबह को नए मानव गढ़ने में हिंदी मीडिया व सिनेमा पुरअसर है। भले ही लोगों में इसमें कुछ कमियाँ हों पर वह प्रकाशोन्मुखी हैं। भारत की अखंडता, सर्वधर्म समभाव, विश्व बंधुत्व की भावना को पुष्ट करने के लिए मीडिया व सिनेमा असत्य, अशिव, असुंदर पर सत्यम शिवम सुंदरम का शंखनाद कर रही है, जो शुभ और सुखद है। अंत में "हिंदी से जिसे प्यार नहीं वह कैसा हिंदुस्तानी है"।

अजय गुप्ता
गाज़ियाबाद यूनिट

दिल में सिनेमा

हिंदी सिनेमा, हिंदी की शान,
फैलाए भाषा का सुंदर गान।
संवाद, गीत, और मधुर बोल,
हर दिल में जगाए भाव अनमोल।

राज कपूर से लेकर आज तक,
हिंदी रही सिनेमा की धड़कन।
गीत–संगीत और भावनाओं की धार,
हिंदी से जुड़ा हर एक विचार मंथन।

दुनिया ने हिंदी को दिया सम्मान,
फिल्मों ने बढ़ाया इसका मान।
संस्कृति की यह अनमोल थाती,
सिनेमा ने हर दिल तक पहुंचा दी।

आर पी सिंह
पंचकुला

हिंदी के प्रसार में लेखकों और गीतकारों का योगदान

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक आत्मा है। यह हमारे साहित्य, परंपराओं और संवादों की पहचान है। समय के साथ, हिंदी ने अनेक माध्यमों से अपना विस्तार किया, लेकिन सिनेमा ने इसे अभूतपूर्व गति दी। सिनेमा ने हिंदी को न केवल जीवंत किया, बल्कि समाज के हर वर्ग तक पहुँचाया। जब एक अंधेरे सिनेमा हॉल में पर्दे पर कोई संवाद गूंजता है या किसी गीत की धुन बजती है, तो केवल शब्द नहीं, बल्कि भावनाएँ भी जीवंत हो उठती हैं। हिंदी सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, यह हमारी भाषा, संस्कृति और पहचान का भी आईना है। वर्षों से, सिनेमा ने हिंदी भाषा को एक सशक्त मंच प्रदान किया है, जहाँ शब्द आत्मा बनते हैं और ध्वनि भावनाओं की भाषा।

आरंभिक दौर में हिंदी साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को जागरूक किया। जब सिनेमा ने गति पकड़ी, तो लेखकों और गीतकारों ने अपनी भाषा की शक्ति को बड़े पर्दे तक पहुँचाने का कार्य किया। उनके शब्द, संवादों और गीतों के रूप में न केवल मनोरंजन का साधन बने, बल्कि हिंदी के प्रचार–प्रसार का भी एक मजबूत आधार बने। लेखकों और गीतकारों ने अपनी लेखनी से हिंदी को न केवल व्यापक बनाया, बल्कि इसे जन–जन तक पहुँचाने का कार्य भी किया। उनकी कलम ने भाषा को ऐसा जीवन दिया, जिसे सिनेमा के पर्दे से लेकर लोगों के दिलों तक की यात्रा में अमरता प्राप्त हुई।

1. संवाद जो हिंदी को अमर बना गए– लेखकों की कलम का जादू

एक अच्छी फिल्म की आत्मा उसकी कहानी होती है और कहानीकार ही वह शिल्पकार है जो शब्दों से भावनाओं का संसार रचता है। हिंदी सिनेमा के प्रारंभिक दौर में मुंशी प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने फिल्म लेखन में कदम रखा, जिससे सिनेमा को गहरी सामाजिक चेतना मिली। आगे चलकर ख्वाजा अहमद अब्बास, सलीम–जावेद, गुलज़ार, राजेंद्र यादव और कमलेश्वर जैसे दिग्गजों ने अपनी लेखनी से हिंदी को सिर्फ संवादों में नहीं, बल्कि आम बोलचाल की भाषा में भी लोकप्रिय बना दिया। हिंदी सिनेमा के कई संवाद ऐसे हैं, जो दशकों बाद भी लोगों की ज़ुबान पर हैं–

- "कितने आदमी थे?" – (शोले)
- "बाबू मोशाय, ज़िंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं।" – (आनंद)
- "ये हाथ मुझे दे दे ठाकुर!" – (शोले)
- "डॉन को पकड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है।" – (डॉन)
- "मेरे पास माँ है।" – (दीवार)

इन संवादों में हिंदी की ताकत महसूस होती है। ये सिर्फ फिल्मी डायलॉग नहीं हैं, बल्कि लोगों की ज़िंदगी का हिस्सा बन गए हैं।

2. गीतों में गूंजती हिंदी

अगर संवाद सिनेमा की आत्मा हैं, तो गीत उसकी धड़कन। हिंदी गीतों ने न केवल भाषा को एक नया रंग दिया, बल्कि उसे विश्वभर में फैलाया भी। हिंदी फिल्मों के गीतकारों ने अपनी लेखनी से भाषा को मधुरता दी और उसे हर वर्ग तक पहुँचाया।

- साहिर लुधियानवी का गीत "ये देश है वीर जवानों का" (नया दौर) हिंदी की गौरवशाली गाथा गाता है।
- शैलेंद्र ने "जीना यहाँ, मरना यहाँ" (मेरा नाम जोकर) लिखकर हिंदी को जीवन का दर्शन बना दिया।
- गुलज़ार ने "दिल तो बच्चा है जी" (इश्किया) जैसी सरल हिंदी को गहरे भावों से भर दिया।
- आनंद बक्षी का "तुझे देखा तो ये जाना सनम" (दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे) आज भी हर हिंदी प्रेमी की ज़ुबान पर है।

- साहिर लुधियानवी का "तू हिंदू बनेगा ना मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है इंसान बनेगा" (धूल का फूल) सामाजिक चेतना का प्रतीक बन गया।

गीतकारों ने हिंदी को केवल गीतों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे प्रेम, देशभक्ति, करुणा और संघर्ष की भाषा बना दिया। यही कारण है कि हिंदी फिल्मों के गीत आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं।

हिंदी सिनेमा ने भाषा को दिया नया आयाम पुराने ज़माने की फ़िल्मों में शुद्ध हिंदी का प्रयोग होता था। मुगल–ए–आज़म, प्यासा और गाइड जैसी फिल्मों में साहित्यिक हिंदी की झलक थी। फिर आया एक दौर, जब हिंदी में सहजता आई और राजकुमार हिरानी, जावेद अख्तर जैसे लेखकों ने उसे आम जनता की भाषा बना दिया।

परिवर्तन के दौर–

- 50–60 का दशक– इस दौर में फ़िल्मों में साहित्यिक हिंदी का प्रयोग किया गया। संवाद क्लिष्ट होते थे और उर्दू का प्रभाव भी देखने को मिलता था।
- 70–80 का दशक– इस समय हिंदी सिनेमा में सलीम–जावेद की जोड़ी ने आम बोलचाल की हिंदी को अपनाया। दीवार, ज़ंजीर, शोले जैसी फिल्मों ने हिंदी को और अधिक लोकप्रिय बनाया।
- 90 के बाद– हिंदी फिल्मों की भाषा और भी सरल हो गई।
- डिजिटल युग– ओटीटी प्लेटफॉर्म्स (नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम, हॉटस्टार) ने हिंदी फिल्मों को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया, जिससे हिंदी भाषा को नई ऊँचाइयाँ मिलीं।

आज के दौर में हिंदी सिनेमा सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी हिंदी के प्रचार का माध्यम बना हुआ है। जब विदेशों में लोग "तुम पास आए, यूँ मुस्कुराए" गुनगुनाते हैं या "बड़े–बड़े देशों में ऐसी छोटी–छोटी बातें होती रहती हैं" कहते हैं, तो यह हिंदी सिनेमा की शक्ति को दर्शाता है।

3. निष्कर्ष

सिनेमा ने हिंदी को सिर्फ प्रचारित ही नहीं किया, बल्कि उसे हर वर्ग, हर पीढ़ी और हर कोने तक पहुँचाया। लेखकों और गीतकारों ने इसे ऐसा रूप दिया कि हिंदी न केवल संवादों और गीतों में जीवंत रही, बल्कि हमारी भावनाओं की भाषा बन गई। जब तक सिनेमा रहेगा, तब तक हिंदी की यह गूंज सुनाई देती रहेगी, क्योंकि शब्दों की ताकत कभी कम नहीं होती, वे कालजयी होते हैं। हिंदी सिनेमा ने भाषा को इतना व्यापक बना दिया है कि आज यह केवल भारत तक सीमित नहीं है। हिंदी फिल्मों के संवाद और गीत न केवल हमें जोड़ते हैं, बल्कि हमें हमारी भाषा और संस्कृति पर गर्व करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। आने वाले समय में, लेखकों और गीतकारों की यही लेखनी हिंदी को और भी ऊँचाइयों तक ले जाएगी।

स्वाति गुप्ता
सीआरएल गाज़ियाबाद

क्या आप जानते हैं / Did you know?

यूनिट / कार्यालय में जिन अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में प्रवीणता प्राप्त होती है, उन्हें यूनिट / कार्यालय प्रमुख द्वारा राजभाषा नियम 8(4) के तहत व्यक्तिशः आदेश दिया जाता है कि वे अपना शत–प्रतिशत काम हिंदी में करें।

Individual Orders are issued by the Unit / Office Head to all those who are having Proficiency in Hindi under OL Rule 8(4) that they will do their cent per cent work in Hindi.

इंटरनेट, मीडिया और सिनेमा से बलखाती हिंदी

हिंदी भाषा भारत की पहचान और संस्कृति का प्रतीक है। यह केवल संचार का माध्यम ही नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता और परंपराओं की धरोहर भी है। दुनिया भर में 60 करोड़ से अधिक वक्ताओं के साथ हिंदी भाषा वैश्विक रूप से सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह न केवल भारत की आधिकारिक भाषा है, बल्कि दुनिया भर के प्रवासी समुदायों द्वारा भी पहचानी और बोली जाती है। हाल के वर्षों में, हिंदी भाषा के वैश्वीकरण में काफी तेजी आई है। हिंदी के प्रचार–प्रसार में इंटरनेट, मीडिया और सिनेमा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। आधुनिक युग में ये तीनों माध्यम न केवल हिंदी भाषा के विकास का साधन बने हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर इसकी लोकप्रियता भी बढ़ा रहे हैं।

1. इंटरनेट का योगदान

21वीं सदी के डिजिटल युग में इंटरनेट ने संचार, ज्ञान और सूचना के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। यह संचार का सबसे प्रभावशाली माध्यम बन चुका है, जिसने विभिन्न भाषाओं के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी भाषा भी इससे अछूती नहीं रही है। इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा को वैश्विक पहचान मिली है और इसके प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा मिली है।

क. हिंदी सामग्री की उपलब्धता– इंटरनेट पर हिंदी भाषा में वेबसाइट्स, ब्लॉग्स, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और अन्य सामग्री की उपलब्धता ने हिंदी के प्रचार–प्रसार को बल दिया है। पहले जहाँ अंग्रेज़ी भाषा का ही वर्चस्व था, वहीं अब हिंदी में भी प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध है। गूगल, याहू, फेसबुक और ट्विटर जैसी प्रमुख वेबसाइट्स ने हिंदी इंटरफ़ेस उपलब्ध कराकर इसे और भी सुलभ बना दिया है। लोग अपनी भावनाएँ, विचार और रचनात्मकता को हिंदी में व्यक्त करने लगे हैं। हिंदी में बनने वाले मीम्स, वीडियो और पोस्ट ने हिंदी भाषा को नए स्वरूप में प्रस्तुत किया है।

ख. हिंदी ब्लॉगिंग और लेखन– आज के समय में कई लोग हिंदी में ब्लॉग लिख रहे हैं, जिससे हिंदी को वैश्विक मंच मिला है। विभिन्न विषयों पर हिंदी में लेख लिखे जा रहे हैं, जो लोगों को हिंदी के प्रति आकर्षित कर रहे हैं।

ग. ऑनलाइन शिक्षा और ई–बुक्स– ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी ने भी अपनी जगह बना ली है। विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स पर हिंदी में भी पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इसके अलावा, हिंदी में ई–बुक्स और साहित्य भी आसानी से इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, जिससे हिंदी के पाठकों की संख्या बढ़ रही है।

घ. हिंदी समाचार पोर्टल– इंटरनेट पर हिंदी के प्रमुख समाचार पोर्टल्स जैसे नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, दैनिक भास्कर और ज़ी न्यूज़ ने हिंदी के प्रचार–प्रसार को नई गति दी है। लोग अब देश–विदेश की ख़बरें हिंदी में पढ़ना पसंद कर रहे हैं। इससे हिंदी के प्रति लोगों का झुकाव बढ़ा है।

ङ. हिंदी तकनीकी शब्दावली का विकास– इंटरनेट के माध्यम से हिंदी में तकनीकी शब्दावली का विकास हुआ है। गूगल ट्रांसलेट जैसे टूल्स ने हिंदी अनुवाद को आसान बनाया है। इससे हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर पर उपयोग बढ़ा है।

2. मीडिया का योगदान हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ देश की सांस्कृतिक और सामाजिक एकता का प्रतीक है। इसके प्रचार–प्रसार में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मीडिया ने हिंदी भाषा को जन–जन तक पहुँचाने और इसे लोकप्रिय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। वर्तमान में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी का प्रभाव और उपयोग लगातार बढ़ रहा है।

क. प्रिंट मीडिया का योगदान– प्रिंट मीडिया जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकों ने हिंदी के प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभाई है। हिंदी के प्रमुख समाचार पत्र जैसे दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान और अमर उजाला ने हिंदी को जनसामान्य तक पहुँचाया। हिंदी साहित्य की पुस्तकों और पत्रिकाओं ने हिंदी भाषा के प्रति रुचि को बढ़ाया और इसे एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। स्थानीय भाषाओं से जुड़ी खबरों और लेखों ने हिंदी को आम जनता के करीब लाने में सहायता की।

ख. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का योगदान– टेलीविज़न और रेडियो ने हिंदी भाषा को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरदर्शन और अन्य हिंदी चैनलों ने समाचार, धारावाहिकों, फिल्मों और कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाया। रेडियो पर हिंदी गीतों, नाटकों और चर्चाओं ने हिंदी को लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा बना दिया।

ग. सोशल मीडिया का योगदान– डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने हिंदी के प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा दी है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप पर हिंदी में पोस्ट, टिप्पणियाँ और संदेशों के माध्यम से लोग हिंदी में संवाद कर रहे हैं। यूट्यूब पर हिंदी कंटेंट क्रिएटर्स के बढ़ते प्रभाव ने युवाओं को हिंदी के प्रति आकर्षित किया है। ब्लॉग और वेब पोर्टल्स के माध्यम से हिंदी में लेखन और पठन को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

3. सिनेमा का योगदान–

हिंदी सिनेमा ने भाषा और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सिनेमा, जिसे सातवां कला माना जाता है, न केवल मनोरंजन का माध्यम है बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई विकास का एक शक्तिशाली उपकरण भी है। हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड) ने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी हिंदी की लोकप्रियता को नई ऊंचाई दी है।

क. हिंदी फिल्मों की शुरुआत– सन् 1913 में दादासाहेब फाल्के की "राजा हरिश्चन्द्र" से हिंदी सिनेमा की शुरुआत हुई। इस मूक फिल्म ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला। इसके बाद आने वाली फिल्मों ने हिंदी भाषा को एक नई पहचान दिलाई। 1931 में "आलम आरा" के साथ जब पहली बार बोलती फिल्म आई, तो हिंदी सिनेमा ने भाषा को और अधिक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाया।

हिंदी सिनेमा ने विभिन्न साहित्यिक कृतियों को फिल्मों में बदलकर हिंदी साहित्य के प्रचार–प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसे, प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित "गोदान" और "गबन" जैसी फिल्में हिंदी साहित्य को आम जनता तक पहुँचाने में सफल रहीं। इसके अलावा, हिंदी फिल्मों के गीतों ने भी हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया। कवियों और गीतकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी को सरल और सुगम बनाया, जिससे यह भाषा जन–जन की जुबान पर चढ़ गई।

ख. अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में हिंदी की उपस्थिति– आधुनिक समय में, हिंदी सिनेमा ने वैश्विक मंच पर भी अपनी छाप छोड़ी है। "लगान", "स्लमडॉग मिलियनेयर" और "पीके" जैसी फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत किया। इसके अलावा, हिंदी सिनेमा के माध्यम से भारतीय समाज के विविध पहलुओं और समस्याओं को उजागर किया गया, जिसने सामाजिक जागरूकता बढ़ाने में भी योगदान दिया। इससे हिंदी की स्वीकार्यता और सम्मान में वृद्धि हुई है।

ग. हिंदी फिल्मों के संवादों का प्रभाव– हिंदी फिल्मों के लोकप्रिय संवाद आम जनजीवन का हिस्सा बन गए हैं। फिल्मों में प्रयोग किए गए सरल और प्रभावशाली हिंदी शब्द लोगों की बोलचाल की भाषा में शामिल हो गए हैं। "डॉन को पकड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है" और "मोगैम्बो खुश हुआ" जैसे लोकप्रिय हिंदी संवाद न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी प्रसिद्ध हुए हैं। इससे हिंदी भाषा की लोकप्रियता बढ़ी है।

घ. हिंदी गीतों का योगदान– हिंदी फिल्मों के गीतों ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है। हिंदी गीतों के बोल और उनकी मधुरता ने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी हिंदी को लोकप्रिय बनाया है। पुराने क्लासिक गीतों से लेकर आधुनिक बॉलीवुड गानों तक हिंदी भाषा की पकड़ मजबूत बनी हुई है।

ङ. ओटीटी प्लेटफॉर्म पर हिंदी का वर्चस्व– नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम, डिज़्नी+ हॉटस्टार जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर हिंदी वेब सीरीज और फिल्मों की लोकप्रियता ने हिंदी के प्रचार को नई दिशा दी है। "मिर्जापुर","दुपहिया" और "पंचायत" जैसी वेब सीरीज ने हिंदी को नई पीढ़ी के बीच लोकप्रिय बनाया है।

निष्कर्ष– इस प्रकार हम देखते हैं कि इंटरनेट, सिनेमा, मीडिया और हिंदी का आपसी रिश्ता बहुत ही खास एवं पक्का है। जैसे हिंदी हिन्दुस्तान की जान है, वैसे ही हिन्दुस्तान में हिंदी के बिना इंटरनेट, सिनेमा और मीडिया की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

हिंदी के प्रचार– प्रसार में इंटरनेट, सिनेमा और मीडिया का योगदान बहुत ही अतुल्य रहा है। इंटरनेट ने हिंदी को डिजिटल दुनिया से जोड़ा, मीडिया ने इसे जन–जन तक पहुंचाया और सिनेमा ने इसे वैश्विक पहचान दिलाई। आज आप भारत के किसी भी कोनें में पहुँच जाएँ वे हिंदी इसलिए समझ पाते हैं कि उन्होने उसे फिल्मों अथवा अन्य मनोरंजन के माध्यम से देखा व सुना है। आज विदेशियों को यदि भारत में अपना प्रचार करना होता है, चाहे वह सिनेमा का हो चाहे उनके उद्योग का हो, उन्हें हमारी राजभाषा हिंदी का सहारा लेना ही पड़ता है, क्योंकि अधिकतर लोग सहज, सरल व सुबोध हिंदी भाषा को जानते, समझते और बोलते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत से बाहर हिंदी फिल्मों को देखने के प्रति भारतवंशी ही लालायित नहीं रहते वरन अन्य भाषा–भाषी भी इनके गीतों को गुनगुनाते नजर आते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी भाषा को शामिल करने के प्रयास हो रहे हैं। प्रवासी भारतीय सम्मेलन, विश्व हिंदी सम्मेलनों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी को वैश्विक मंच पर स्थापित किया जा रहा है। आधुनिक युग में हिंदी को वैश्विक मंच पर स्थापित करने के लिए हमें इन माध्यमों का सही उपयोग करना होगा। हिंदी हमारी पहचान है, इसे सहेजना और आगे बढ़ाना हम सबकी ज़िम्मेदारी है।

हिंदी के दीप जले, इंटरनेट के द्वार,
हर दिल में जाग उठी, हिंदी की पुकार।
मीडिया ने बिखेरे, शब्दों के उजास,
सिनेमा ने रच दिया, भावों का इतिहास।

ज़ोया ख़ान
गाज़ियाबाद यूनिट

क्या आप जानते हैं / Did you know?

केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन वर्ष 1949 में भारत की संविधान सभा ने हिंदी को भारत के केंद्र सरकार की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

14th September is observed as Hindi Day in every Central Govt office because on this day in 1949, Constitution Assembly of India had adopted Hindi as Official Language of Central Govt. of India.

जिस यूनिट / कार्यालय के 80% से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान होता है, ऐसे यूनिट / कार्यालय को भारत सरकार द्वारा राजभाषा नियम 10(4) के तहत अधिसूचित किया जाता है। आज की तारीख में (अप्रैल 2025) चेन्नई और मछिलिपट्टणम यूनिटों को छोड़कर, बीईएल की सभी यूनिटें / कार्यालय अधिसूचित हैं।

Where more than 80% of employees are having knowledge of Hindi, such Unit / Office will be notified by the GoI under OL Rule 10(4). As on date (April 2025) except CHN and MC Units, all other Units / Offices are notified under this rule.

राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से भारत को 03 क्षेत्रों में (क, ख और ग) वर्गीकृत किया गया है। 'क' क्षेत्र में हिंदी भाषी राज्य, 'ख' क्षेत्र में हिंदी सरीखे राज्य और 'ग' क्षेत्र में हिंदीतर भाषी राज्य/ संघ शासित राज्य आते हैं।

In order to achieve targets of OL implementation, India is classified into 03 regions (A, B and C). All Hindi speaking States / UTs come under 'A' region, Hindi Like Speaking Stats / UTs come under 'B' region and all Non Hindi Speaking States / UTs come under 'C' region.

"निर्मल धारा नैतिकता की और"

जहां पग पग पर नैतिकता करती थी बसेरा
वो भारत देश था मेरा वो भारत देश था मेरा

संस्कृति और साहित्य था मेरे भारत का महान
तभी तो नैतिक मूल्यों में बस्ती थी इस की जान

धीरे धीरे पश्चिमी सभ्यता का क्या नशा चढ़ा
भोला भाला मानव भी अनैतिकता की ओर बढ़ा

क्या हो रहा समाज में , किसी को इस की खबर नही
कैसे रुकेगा ये, हर मानव की चिंता भी यही

क्योंकि:
नैतिकता का पतन हो रहा, व्यक्ति मूल्य का आहास हो रहा
जीवन मूल्य पतित हो रहा, मानव मूल्य का परिहास हो रहा

कोई कहता कलयुग तो कोई कहता भ्रष्टाचार
क्या इसे नाम दें खुद मानव भी हो गया लाचार

यहाँ हर रिश्ता भूल गया इंसान
दो पैसे के लिए बिक रहा ईमान

खून का रंग हो गया सफ़ेद पैसे ओर पद की चाह में
भूल गया मानव दुख ओर अंधेरे ही हैं इस राह में

अनैतिकता बन चुकी है एक सामाजिक बीमारी
पीड़ित हर मानव है कभी तेरी बारी तो कभी मेरी बारी
घुट घुट कर जी रहा आज हर इंसान
कुम्मी पूछती है क्या इस का भी है कोई निदान

अपना ही प्रश्न सुन दिल से आई ये आवाज़
बच्चे ही हमारा भविष्य बच्चे ही हमारा समाज

बच्चो में गुण बहुत है छु सकते आकाश
नैतिक शिक्षा से करें इन का स्वस्थ विकास

जैसे अभिमन्यु ने माँ की कोख से सीखा चक्रव्यूह में जाना
अब हर बच्चा माँ की कोख से ही सीखेगा इस अनैतिकता
से बाहर आना

पशुवत बच्चा जन्म ले पशु जैसा व्यवहार
नैतिक शिक्षा से करें इन में नित्य सुधार

भोजन पानी जिस तरह लेते हम नियमित नित्य
ऐसे ही नैतिक शिक्षा के लिए बच्चों को दें अपना साहित्य

बच्चे नैतिक बन गए सफल हो गए हम ओर आप
मिट जाएँ गे हमारे जीवन के दुख ओर संताप

"आइए हम सब लगाते हैं नैतिक मूल्यों का नारा
क्योंकि इस में बहती है सब की जीवन धारा"

कुम्मी शर्मा
क्षे. का. दिल्ली

क्या आप जानते हैं / Did you know?

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के तहत आने वाले दस्तावेजों का द्विभाषी रूप में (हिंदी और अंग्रेजी) जारी करना अनिवार्य है। इन दस्तावेजों में कार्यालय आदेश, परिपत्र, ज्ञापन, प्रशासनिक रिपोर्ट, निविदा, प्रेस विज्ञप्ति, लाइसेंस आदि आते हैं।

Documents coming U/s 3(3) of OL Act must be issued in bilingual (in Hindi and English). These documents include Office Orders, Circulars, Memo, Admin Reports, Press Communique, Tender, Licensing etc.

आइए हिंदी माध्यम से कन्नड़ा सीखें
ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲಿತು ಮಾತಾಡೋಣ

नव वर्ष की शुभकामनाएं।	ಹೊಸ ವರ್ಷದ ಶುಭಾಷಯಗಳು.	होस वर्षद शुभाषयगळु।
जन्म दिन मुबारक।	ಹುಟ್ಟು ಹಬ್ಬದ ಶುಭಾಷಯಗಳು.	हुट्टु हब्बद शुभाषयगळु।
सभी का स्वागत।	ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಸ್ವಾಗತ.	एल्लरिगू स्वागत।
आपके पधारने का धन्यवाद।	ನೀವು ಬಂದಿದಕ್ಕೆ ಧನ್ಯವಾದಗಳು.	नीवु बंदिदक्के धन्यवादगळु।
जरा एक मिनट।	ಒಂದೇ ನಿಮಿಷ.	ओंदे निमिष।
अभी आया।	ಈಗ ಬಂದೆ.	ईग बंदे।
काफी है।	ಸಾಕು.	साकु।
अभिनंदन के साथ।	ಅಭಿನಂದನೆಗಳೊಂದಿಗೆ.	अभिनंदनेगळोंदिगे।
सच बोलो।	ನಿಜ ಹೇಳು.	निज हेळु।
झूठ मत बोलो।	ಸುಳ್ಳು ಹೇಳಬೇಡ.	सुळ्ळु हेळा बेडा।
आगे आओ।	ಮುಂದೆ ಬನ್ನಿ.	मुंदे बन्नि।
बुरी आदतें छोड़ो।	ಕೆಟ್ಟ ಅಭ್ಯಾಸಗಳನ್ನು ಬಿಡು.	केट्ट अभ्यासगळन्नु बिडु।
अपना काम देखो।	ನಿನ್ನ ಕೆಲಸ ನೋಡು.	निन्न केलस नोडु।
हमें समय पर जाना चाहिए।	ನಾವು ಸಮಯಕ್ಕೆ ಸರಿಯಾಗಿ ಹೋಗಬೇಕು.	नावु समयक्के सरियागि होगबेकु।
महिलाओं के लिए।	ಮಹಿಳೆಯರಿಗಾಗಿ.	महिळेयरिगागि।
भाड़े के लिए।	ಬಾಡಿಗೆಗಾಗಿ.	बाडिगेगागि।
थूकना मना है।	ಉಗುಳಬಾರದು.	उगुळबारदु।
वाहन खड़ा करना मना है।	ವಾಹನಗಳನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಬೇಡಿ.	वाहनगळन्नु निल्लिसबेडि।
प्रवेश वर्जित।	ಪ್ರವೇಶವಿಲ್ಲ.	प्रवेशविल्ला।
जैसे आपकी इच्छा।	ನಿಮ್ಮ ಆಸೆಯಂತೆ / ನೀವು ಬಯಸಿದಂತೆ.	निम्म आसेयंते / नीवु बयसिदंते ।
इश्तहार मत लगाओ।	ಬಿತ್ತಿ ಪತ್ರಗಳನ್ನು ಅಂಟಿಸಬೇಡಿ.	बित्ति पत्रगळन्नु अंटिसबेडि।
हड़बड़ी मत करो।	ಆತುರಪಡಬೇಡ.	आतुरपडबेडा।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

आइए हिंदी माध्यम से कन्नड़ा सीखें
ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲಿತು ಮಾತಾಡೋಣ

परिश्रम करो।	ಕಷ್ಟ ಪಡು / ಶ್ರಮವಹಿಸು.	कष्टपडु / श्रमवहिसु।
जल्दी उठो।	ಬೇಗ ಎದ್ದೇಳು.	बेग एद्देळु।
मुझे समझने का प्रयास करो।	ನನ್ನನ್ನು ಅರ್ಥ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸು.	नन्नन्नु अर्थ माडिकोळ्ळलु प्रयत्निसि।
कितनी महान विजय !	ಎಂತಹ ದೊಡ್ಡ ಗೆಲುವು.	एंतह दोड्ड गेलुवु।
बाकी पैसे लौटा दो।	ಮಿಕ್ಕ ಹಣವನ್ನು ಹಿಂತಿರುಗಿಸು.	मिक्क हणवन्नु हिंतिरुगिसु।
हमारे लिए कुछ मिठाई लाइए।	ನಮಗಾಗಿ ಏನಾದರೂ ಸಿಹಿ ತನ್ನಿ.	नमगागि एनादरू सिहि तन्नि।
कृपया ये वस्तुएं मेरे घर पर पहुंच दीजिए।	ದಯವಿಟ್ಟು ಈ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ನನ್ನ ಮನೆಗೆ ಕಳುಹಿಸಿ.	दयविट्टु ई वस्तुगळन्नु नन्न मनेगे कळुहिसि ।
तुम सदा पैसे चुकाना भूल जाते हो।	ನೀನು ಯಾವಾಗಲೂ ಹಣ ಹಿಂತಿರುಗಿಸಲು ಮರೆತು ಹೋಗುತ್ತೀಯ.	नीनु यावागलू हण हिंतिरुगिसलु मरेतु होगुतीय।
वह हर समय ऐनक पहनती हैं।	ಅವಳು ಯಾವಾಗಲೂ ಕನ್ನಡಕ ಧರಿಸುತ್ತಾಳೆ.	अवळु यावागलू कन्नडक धरिसुत्ताळे।
हम भारत में रहते है।	ನಾವು ಭಾರತದಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತೇವೆ.	नावु भारतदल्लि वासिसुत्तेवे।
वे गलत सोचते होंगे।	ಅವರು ತಪ್ಪಾಗಿ ಯೋಚಿಸುತ್ತಿರ ಬಹುದು.	अवरु तप्पागि योचिसुत्तिर बहुदु।
वह अपने कार्यालय पहुंच रही होगी।	ಅವಳು ತನ್ನ ಕಛೇರಿಯನ್ನು ತಲುಪುತ್ತಿರ ಬಹುದು.	अवळु तन्न कछेरियन्नु तलुपुत्तिर बहुदु।
मैं आसमान की ओर देख रहा हूँ।	ನಾನು ಆಕಾಶ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದೇನೆ.	नानु आकाश नोडुत्तिद्देने।
मैं इसे बाद में देखूंगा।	ನಾನು ಇದನ್ನು ನಂತರ ನೋಡುತ್ತೇನೆ.	नानु इदन्नु नंतर नोडुत्तेने।
मैं शाम के निश्चित रूप से लौट जाऊँगा।	ನಾನು ಸಂಜೆ ಖಂಡಿತ ಹಿಂತಿರುಗುತ್ತೇನೆ.	नानु संजे खंडित हिंतिरुगुत्तेने।
इससे मेरा काम चल जाएगा।	ಇದರಿಂದ ನನ್ನ ಕೆಲಸ ಆಗುತ್ತದೆ.	इदरिंद नन्न केलस आगुत्तदे।
मैं परसो लौट जाऊँगा।	ನಾನು ನಾಡಿದ್ದು ಹಿಂತಿರುಗುತ್ತೇನೆ.	नानु नाडिद्दु हिंतिरुत्तेने।
कुछ बच्चे मिठाई पसंद करते हैं।	ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳು ಸಿಹಿ ತಿಂಡಿಯನ್ನು ಇಷ್ಟಪಡುತ್ತಾರೆ.	केलवु मक्कळु सिहि तिंडिगळन्नु इष्टपडुत्तारे।
इसे सनो।	ಇದನ್ನು ಕೇಳಿ.	इदन्नु केळि।

एयरो इंडिया 2025 में बीईएल ने अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन किया

बेंगलूरु के येलहंका वायु सेना स्टेशन में 10 से 14 फरवरी, 2025 तक आयोजित एयरो इंडिया 2025 में नवरत्न रक्षा पीएसयू भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) ने अत्याधुनिक तकनीकों को नियोजित करते हुए और अपने कारोबार के प्रत्येक क्षेत्र में फैलते हुए अत्याधुनिक उत्पादों और प्रणालियों का प्रदर्शन किया। बीईएल 14 क्लस्टरों यथा 'डिफेंस कम्युनिकेशन', 'इलेक्ट्रो ऑप्टिक्स', 'एविओनिक्स एंड एयरबोर्न इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर', 'शिपबोर्न सिस्टम', 'वेपन सिस्टम', 'लैंड–बेस्ड इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर', 'फ्यूचरिस्टिक टेक्नोलॉजिज', 'कटिंग एज सॉल्यूशंस', 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस', 'आर्म्स एंड एम्युनिशन', 'रेडार सिस्टम', 'वैश्विक सहयोग' और 'घरेलू साझेदारी' में हॉल ई4.1 में अपने प्रदर्शनी स्टाल पर सशस्त्र बलों के लिए अपने नवीनतम उत्पादों को प्रदर्शित किया।

कंपनी गतिविधियां

हाल ही में प्राप्त पुरस्कार

बीईएल को 'आयात प्रतिस्थापन' के लिए माननीय रक्षा मंत्री द्वारा एसआईडीएम चैम्पियन पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया।

बीईएल ने तृतीय पीएसयू परिवर्तन पुरस्कार 2024 में जोखिम प्रबंधन नेतृत्व पुरस्कार, डिजिटल परिवर्तन पुरस्कार, हरित पहल पुरस्कार और नवोन्मेषी उत्पाद विकास पुरस्कार के लिए 4 पुरस्कार प्राप्त किए।

बीईएल की पंचकुला यूनिट ने वर्ष 2024 के लिए प्रतिष्ठित सीआईआई एक्जिम बैंक कारोबार उत्कृष्टता पुरस्कार और पुणे यूनिट ने प्लेटिनम पुरस्कार प्राप्त किया।

स्कोप–उत्कृष्टता पुरस्कार–डिजिटलीकरण के लिए

बीईएल को लगातार में दूसरे वर्ष के लिए ईटी आइकॉनिक ब्रांड घोषित किया गया है।

हैदराबाद यूनिट ने सीआईआई एक्जिम बैंक कारोबारी उत्कृष्टता पुरस्कार जीता।

राजभाषाई निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप–समिति द्वारा दिनांक 20.11.2024 को सीआरएल, गा.बाद का निरीक्षण किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप–समिति द्वारा दिनांक 22.01.2025 को बेंगलूरु कॉमप्लेक्स का निरीक्षण किया गया।

रक्षा मंत्रालय के निरीक्षण

15.01.2025 को रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा गाज़ियाबाद यूनिट का राजभाषा निरीक्षण किया गया व निरीक्षण के दौरान यूनिट की राजभाषा पत्रिका सृजनी के 11वें अंक का विमोचन भी किया गया।

कार्पोरेट राजभाषाई निरीक्षण

चालू वित्त वर्ष के दौरान कार्पोरेट कार्यालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार 06 यूनिटों / कार्यालयों का राजभाषाई निरीक्षण किया। महाप्रबंधक (आंतरिक लेखापरीक्षा) द्वारा चेन्नई और विदेश स्थित न्यूयॉर्क क्षेत्रीय कार्यालय, महाप्रबंधक (टीपी) द्वारा नवी मुंबई यूनिट, महाप्रबंधक (एसपी) द्वारा हैदराबाद और पंचकुला यूनिट तथा महाप्रबंधक (मा.सं.) द्वारा कोटद्वार यूनिट और बेंगलूरु कॉम्प्लेक्स का निरीक्षण किया गया।

कृष्णा सोबती हिंदी व्याख्यान माला

दिनांक 21.03.2025 को कृष्णा सोबती हिंदी व्याख्यानमाला के अंतर्गत डॉ देवव्रत कुमार, प्रोफेसर, नैदानिक मनोविज्ञान विभाग, निमहान्स, बेंगलूरु द्वारा "बच्चों का लालन–पालन – मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया ।

विश्व हिंदी दिवस

दिनांक 10.01.2025 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कार्पोरेट कार्यालय के कर्मचारियों के लिए 'विविधा' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन

दिनांक 28 फरवरी, 2025 को बीईएल हैदराबाद में एक दिवसीय अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री अनिर्बान कुमार बिस्वास, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय थे। सम्मेलन की अध्यक्षता निदेशक (मानव संसाधन) ने की। अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक तथा निदेशकगण वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से सम्मेलन में शामिल हुए और बीईएल राजभाषा पुस्तिका "अथक" का विमोचन किया। बीईएल की सभी यूनिटों और कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों ने प्रस्तुतीकरण दिया। आमंत्रित संकाय सदस्य डॉ राजनारायण अवस्थी, सदस्य सचिव, नराकास (उपक्रम), हैदराबाद–सिकंदराबाद ने "संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली – तैयारी व अभ्यास" पर व्याख्यान दिया और प्रश्नावली भरने का अभ्यास कराया। डॉ वी वेंकटेश्वर राव, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), से.नि., केनरा बैंक ने "राजभाषा कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियां व समाधान" विषय पर उपयोगी व्याख्यान दिया। सभी प्रतिभागियों के लिए मनोरंजक कार्यक्रम "विविधा" का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.02.2025 को कार्पोरेट कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु श्री सुरेश कुमार वी, उप प्रबंधक (रा.भा,) हैदराबाद, श्री श्यामलाल दास, सहायक प्रबंधक (रा.भा.) चेन्नई, श्री सेतुरत्नम, अनुवादक, बीजी कॉमप्लेक्स को 'रामधारी सिंह दिनकर' पुरस्कार तथा श्रीमती नवजोत पीटर, अधिकारी (रा.भा.), गाज़ियाबाद को 'महादेवी वर्मा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन– बीईएल की प्रतिभागिता

दिनांक 04.01.2025 को मैसूरू और दिनांक 17.02.2025 को जयपुर, राजस्थान में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित दक्षिण मध्य, पश्चिम और उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लेते हुए बीईएल की राजभाषा टीम।

प्रकाशन

कार्पोरेट गृह पत्रिका 'नवप्रभा' के 17 वें अंक का विमोचन करते हुए सीएमडी और राभाकास सदस्य।

कर्तव्यनिष्ठा सम्मान...

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सेवानिवृत्त सदस्य श्री दिब्येंदु बिद्यांत, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.) को अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया।

नराकास गतिविधियां

नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के तत्वावधान में संयोजक कार्यालय एचएएल में दिनांक 25.03.2025 को नराकास की वर्ष 2024–25 की दूसरी अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें एचएएल, बीईएल और आईटीआई के सीएमडी, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय तथा बेंगलूरु स्थित विभिन्न पीएसयू के उच्चाधिकारियों और राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), बेंगलुरु के संयोजक कार्यालय एच ए एल, मुख्यालय द्वारा दिनांक 04.12.2025 को आयोजित प्रथम छमाही बैठक में बीईएल कॉर्पोरेट कार्यालय को वर्ष 2023–24 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री विक्रमन एन, निदेशक (मानव संसाधन), बीईएल ने राजभाषा टीम के साथ यह पुरस्कार ग्रहण किया।

नई पहल

बीईएल राजभाषा पुस्तिका "अथक"

अथक – बीईएल में राजभाषा कार्यान्वयन का संपूर्ण लेखा–जोखा का संकलन। दिनांक 28.02.2025 को बीईएल हैदराबाद में आयोजित अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन में बीईएल राजभाषा पुस्तक यानी कॉफी टेबल बुक का विमोचन अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय ने किया। जैसा नाम से ज्ञात होता है, इस पुस्तक में बीईएल में राजभाषा की यात्रा, राजभाषा कार्यान्वयन के लिए की गई अभिनव पहलों, कार्यकलापों, राजभाषा स्टाफ और उपलब्धियों की सचित्र झलकी प्रस्तुत की गई है। सम्मेलन में इस प्रयास की सभी ने भूरि–भूरि प्रशंसा की।

बीईएल की वेबसाइट हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध है। वेबसाइट खोलते ही हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का विकल्प खुलता है। जब कभी अंग्रेजी साइट में कोई सामग्री (स्थिर या गतिशील) अद्यतन की जाती है, यथासंभव उसी दिन हिंदी साइट में तत्संबंधी सामग्री अद्यतन की जाती है। इसके अलावा वेबसाइट में राजभाषा समर्पित विशेष खंड "राजभाषा कार्यान्वयन" भी शामिल किया गया है जिसमें कंपनी की राजभाषा संबंधी गतिविधियों, पत्र–पत्रिकाएं, प्रकाशन, प्रोत्साहन योजनाएं और नीति निर्देश आदि उपलब्ध कराए गए हैं।

राजभाषा गतिविधियां

बेंगलूरु कॉम्प्लेक्स

दिनांक 28 अक्टूबर, 2024 को हिंदी माह समापन एवं हिंदी माह प्रतियोगिताओं के विजेताओं के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

भारतीय भाषा दिवस समारोह

हर वर्ष 11 दिसंबर को तमिल कवि 'चिन्नस्वामी सुब्रमण्यम भारती' जो आधुनिक कविता के अग्रदूत 'महाकवि भारती' के रूप में लोकप्रिय हैं, उनकी जयंती को 'भारतीय भाषा दिवस' के रुप में मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों को भारतीय भाषाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना, उन्हें अधिक से अधिक भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना है।

दिनांक 11.11.2024को'भारतीय भाषा दिवस' समारोह आयोजित किया गया। प्रतिभागियों द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं में कविता,भाषण एवं लघुनाटक की प्रस्तुति की गई।

दिनांक 28.12.2024 को चार सत्रों में पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कुल 205 कार्यपालक उपस्थित रहे। दिनांक 07.01.2025 को पूर्ण दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। संकाय सदस्य के रुप में श्री रजनीश सिन्हा,राजभाषा अधिकारी,के.आई.ओ.सी.एल. उपस्थित थे।

राजभाषा गतिविधियां

चेन्नई यूनिट

दिनांक 09.11.2024 और दिनांक 10.01.2025 को क्रमशः "हिंदी वार्तालाप एवं बेसिक अनुवाद" तथा "कंप्यूटर पर हिंदी यूनिकोड टंकण" विषयों पर हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में डॉ एन गुरुमूर्ति, वरिष्ठ अनुवादक (सेवानिवृत्त), दक्षिण रेलवे, चेन्नई तथा श्रीमती पी सुप्रजा, सहायक निदेशक (रा.भा.) हिंदी शिक्षण योजना, चेन्नई को आमंत्रित किया गया था।

यूनिट में वर्ष 2024 में संचालित सत्र

जुलाई–नवंबर के लिए हिंदी प्रशिक्षण कक्षाएं आयोजित की गई, जिसमें ३३ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने दिसंबर 2024 के दौरान हिंदी परीक्षा (प्रबोध/प्रवीण/प्रज्ञा व पारंगत) उत्तीर्ण की। यूनिट में अलग–अलग हिंदी परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वालों को बीईएल, चेन्नई के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर पुरस्कार व प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए।

बीईएल, चेन्नई की गृह पत्रिका (दिसंबर 2024) "चेन्नई मलर" के प्रथम हिंदी संस्करण का विमोचन

कार्यालय में हिंदी में मूल कार्य करने हेतु 26 कार्मिकों को वर्ष (2023–24) के लिए हिंदी प्रोत्साहन योजना पुरस्कार (प्रेमचंद एवं जयशंकर प्रसाद योजना पुरस्कार) प्रदान किए गए।

राजभाषा गतिविधियां

हैदराबाद यूनिट

दिनांक 09.11.2024 एवं दिनांक 05.02.2025 को पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं का संचालन हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद कार्यालय के प्राध्यापकों द्वारा किया गया।

पारंगत पाठ्यक्रम के संदर्भ में कार्पोरेट कार्यालय द्वारा प्राप्त पत्र के अनुपालन में बी.ई.एल–हैदराबाद यूनिट में जुलाई 2021 से प्रारंभ करते हुए पारंगत कक्षाओं का आयोजन हिंदी शिक्षण योजना के समन्वय से किया जा रहा है। इन कक्षाओं के लिए जुलाई नवंबर 2024 सत्र में यूनिट से कुल 26 कर्मचारी उत्तीर्ण हुए।

दिनांक 14.11.2024 को बाल दिवस पर हिंदी फिल्म परीक्षा प्रदर्शित किया गया। दिनांक 10.01.2025 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन करते हुए, यूनिट में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया और इसमें लगभग 56 कर्मचारी उपस्थित हुए।

दि. 11.11.2024 को नराकास की 60वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन मिधानी, कंचनबाग में किया गया जिसमें यूनिट से श्री सीएच विश्वनाथम, महाप्रबंधक और राजभाषा कर्मी उपस्थित हुए। इस बैठक में बीईएल, हैदराबाद की और से प्रस्तुतिकरण दिया गया।

दिनांक 04.02.2025 को हिंदी गृह पत्रिका है–वेव्ज और बीईएल हिंदी फिल्म का लोकार्पण श्री भानू प्रकाश श्रीवास्तव, निदेशक(अन्य यूनिटें) द्वारा किया गया।

राजभाषा गतिविधियां

गाज़ियाबाद यूनिट

बीईएल, गाज़ियाबाद में नवनियुक्त कार्मिकों हेतु उनके आरंभिक प्रशिक्षण के दौरान 'टिप्पण एवं पत्र व्यवहार' पर राजभाषा सत्र का आयोजन किया गया तथा एनसीएस एसबीयू के नामित राजभाषा अधिकारी व राजभाषा समन्वयकों हेतु राजभाषा नीति नियम पर सत्र का आयोजन किया गया। श्री ललित भूषण, सदस्य सचिव नराकास (उपक्रम) गाज़ियाबाद द्वारा 'कंठस्थ राजभाषा टूल का परिचय एवं व्यावहारिक प्रयोग' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कराया गया।

यूनिट में 21 फरवरी, 2025 को मातृभाषा दिवस के अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु काव्य–पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

06 दिसंबर, 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), गाज़ियाबाद के सदस्य कार्यालयों हेतु भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, गाज़ियाबाद द्वारा 'अंत्याक्षरी' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

20 दिसंबर, 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गाज़ियाबाद की छमाही बैठक में बीईएल, गाज़ियाबाद द्वारा भाग लिया गया।

राजभाषा गतिविधियां

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला – गाज़ियाबाद

दिनांक 18.12.2024 को "राजभाषा नीति और कार्यान्वयन" विषय पर उच्चाधिकारियों हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 40 उच्चाधिकारियों ने भाग लिया। उक्त कार्यशाला में केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, गाज़ियाबाद की राजभाषा पत्रिका "उत्कर्ष" के 14वें अंक का विमोचन किया गया तथा इसके रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया। दिनांक 10.01.2025 को कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस पर नराकास उपक्रम, गाजियाबाद के अधीनस्थ कार्यालयों के कार्मिकों के लिए अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नराकास के सदस्य सचिव श्री ललित भूषण द्वारा सभी प्रतिभागियों के लिए 'विश्वभाषा की ओर बढ़ती हिंदी' पर एक व्याख्यान भी प्रस्तुत किया। दिनांक 06.02.2025 को नवनियुक्त 84 प्रशिक्षुओं के लिए राजभाषा सत्र का आयोजन किया गया।

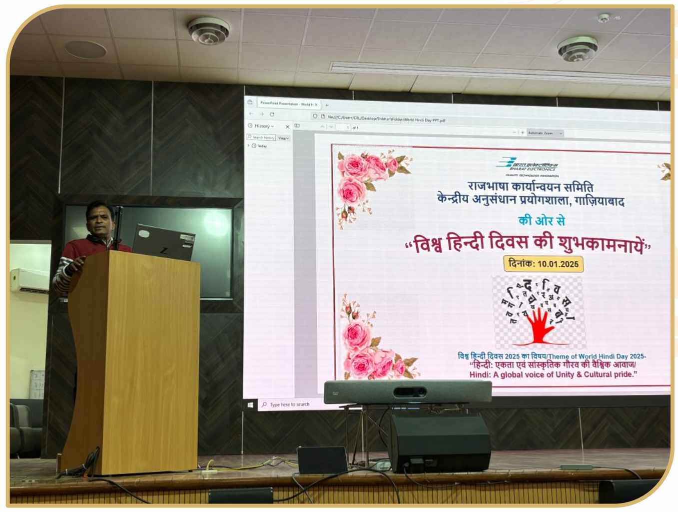

कोटद्वार यूनिट

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की कोटद्वार यूनिट में 10 जनवरी 2025 को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया। एकक के प्रमुख स्थलों पर विश्व हिंदी दिवस के बैनर लगाए गए तथा डिजिटल डिस्प्ले पर हिंदी प्रचार प्रसार संबंधी महापुरुषों व साहित्यकारो के हिंदी प्रयोग को प्रोत्साहित करते वाक्यांश प्रदर्शित किए गए। इस अवसर पर मानव संसाधन विकास केंद्र में एक स्वरचित कविता पाठ का आयोजन किया गया जिसमें 10 कवियों ने भाग लिया। श्रोता के रूप में काव्य रसास्वादन के लिए काफी संख्या में कार्मिक उपस्थित रहे तथा यूनिट के मानव संसाधन विकास केंद्र में कार्मिकों के लिए 'राजभाषा नीति' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 32 कार्मिकों ने भाग लिया।

वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाए

1	2		3	4	■	5		6
7		■	8				■	
9		10			■	11	12	■
	■		■	■	13			14
■	15		16	17	■	■	18	
19		■	20		21	■		■
22		23	■	24		25	■	26
	■	27	28	■	29		30	
■	31				■	32		

बाएं से दाएं...

1. हिमालय स्थित बाबा बर्फानी (5), 5. सब्जी आदि का रसा (3), 7. दूल्हा (2), 8. एक राह पर चलने वाला (2–2), 9. चुटीली बात कहना (2–3), 11. इच्छा, मर्जी, (2), 13. स्वार्थी (4), 15. टीन का पीपा (4), 18. पत्नी का भाई, चालू अपशब्द (2), 19. कपोल, रुखसार (2), 20. रात्रि, रात (3), 22. एकत्र, इकट्ठा, (3), 24. दया, रहम (3), 27. दण्ड, (2), 29. चमकना (4), 31. अशिक्षित, निरक्षर (4), 32. सोता, निर्झर,चश्मा (3),

ऊपर से नीचे...

1. देवता का मनुष्य के रूप में जन्म लेना (4), 2. मृत्यु होना (3), 3. शेर, सिंह (3), 4. ठहरना, रुकना (3), 5. प्रसिद्धि, ख्याति (4), 6. पश्चात, उपरांत (2), 10. नवनीत, मक्खन (3), 12. ठग, धोखेबाज (2–2), 14. आफत, संकट, मुसीबत (2), 15. सार्थक शब्द, इस्लाम धर्म का मूल मंत्र (3) 16. सतह, परत (2), 17. चांदी (3), 19. गरजना, बोलना (3), 21. बादल, मेघ (3), 23. वस्त्र, कपड़ा (3) 25. ख्याल, विचार, बुद्धि (3), 26. किसी के सामने कहना, जताना (3) 28. किसी मंत्र या ईश्वर का बार– बार स्मरण करना (2), 30. हाथ, शुल्क (2)

चंन्द्रधर शर्मा गुलेरी

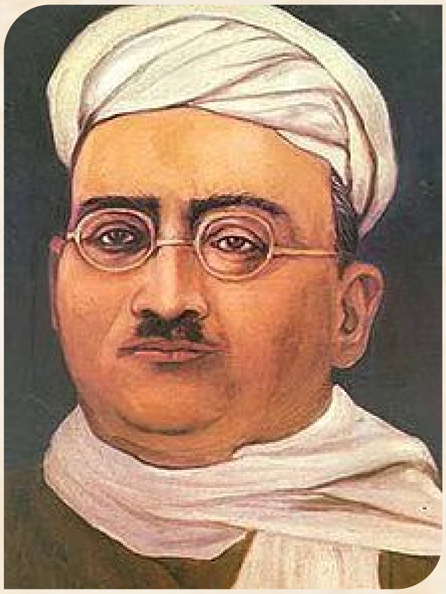

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कथन "कम लिखो, मगर अच्छा लिखो" को सार्थक करे वाले चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म 7 जुलाई, 1883 को जयपुर, राजस्थान में हुआ था। उनके पूर्वज हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा क्षेत्र के गुलेर नामक स्थान के निवासी थे। उनके पिता ज्योतिर्विद महामहोपाध्याय पंडित शिवराम शास्त्री राजसम्मान पाकर जयपुर, राजस्थान में बस गए थे। मात्र 10 वर्ष की आयु में ही गुलेरी जी संस्कृत भाषा के ज्ञान एवं भाषण में अभ्यस्थ हो गए थे।

वर्ष 1893 में उन्होंने जयपुर के महाराजा कॉलेज में दाखिला लिया। उन्होंने वर्ष 1899 में कोलकाता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक तथा वर्ष 1904 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने मेयो कॉलेज अजमेर में अध्यापक पद पर कार्य किया। वे अपने शिष्यों के बीच लोकप्रिय थे। गुलेरी जी की असाधारण योग्यता से प्रभावित होकर पंडित मदनमोहन मालवीय जी ने उन्हें बनारस बुलाया और हिंदू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद दिलाया।

गुलेरी जी ने अध्ययन और स्वाध्याय द्वारा हिंदी और अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, बांग्ला, मराठी आदि के साथ ही जर्मन और फ्रेंच भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया था। उनकी रुचि धर्म, ज्योतिष, इतिहास, पुरातत्व दर्शन, भाषा विज्ञान, शिक्षा और साहित्य से लेकर संगीत, चित्रकला, लोककला, विज्ञान और राजनीति तथा समसामयिक सामाजिक स्थिति तथा रीति–नीति में भी थी।

गुलेरी जी संपादक, निबंधकार तथा कहानीकार थे। उन्होंने बहुत कम रचनाओं के माध्यम से ख्याति अर्जित की। उन्होंने तत्कालीन प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' के संपादन के अतिरिक्त जयपुर से 'समालोचक' नामक पत्रिका का संपादन भी किया। उनकी कहानी "उसने कहा था" ने सभी कीर्तिमान तोड़ दिए थे। उनका कहानी संग्रह 'गुलेरी जी की अमर कहानियां' नाम से प्रसिद्ध है।

12 सितंबर 1922 को काशी में 39 वर्ष की अल्पायु में ही उनका निधन हो गया।

(सौजन्य – राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय)

बी ई एल गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ है यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम है बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

देविका रानी
1969

बिरेंद्रनाथ सरकार
1970

पृथ्वीराज कपूर
1970

पंकज मल्लिक
1972

रूबी मेयर्स
(सुलोचना)
1973

बोमिरेड्डी नरसिम्हा रेड्डी
1974

देविका रानी
1975

बिरेंद्रनाथ सरकार
1976

नितिन बोस
1977

रायचंद बोराल
1978

सोहराब मोदी
1979

पैदी जयराज
1980

नौशाद
1981

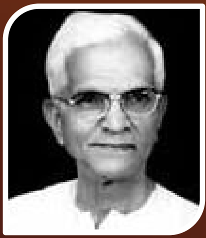
एल वी प्रसाद
1982

दुर्गा खोटे
1983

सत्यजीत रे
1984

वी. शांताराम
1985

बी नागि रेड्डी
1986

राज कपूर
1987

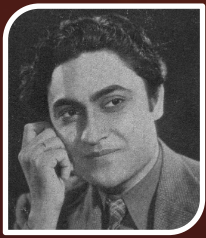
अशोक कुमार
1988

लता मंगेशकर
1989

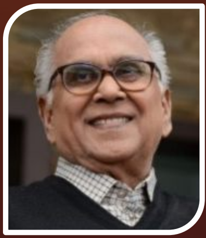
अक्किनेनि नागेश्वर राव
1990

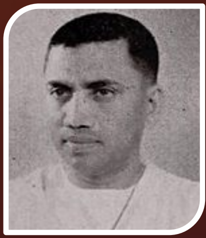
भालजी पेंढारकर
1991

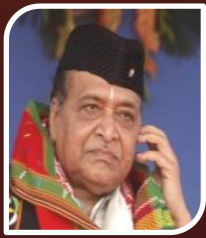
भूपेन हजारिका
1992

मजरूह सुल्तानपुरी
1993

दिलीप कुमार
1994

डॉ. राजकुमार
1995

शिवाजी गणेशन
1996

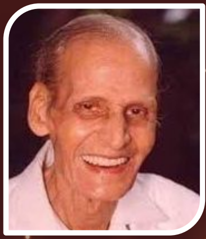
कवि प्रदीप
1997

बी आर चोपड़ा
1998

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

हृषिकेष मुखर्जी
1999

आशा भोसले
2000

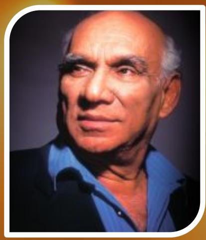
यश चोपड़ा
2001

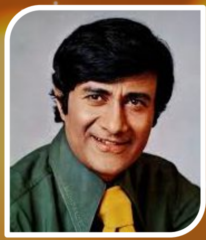
देवानंद
2002

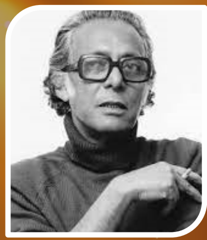
मृणाल सेन
2003

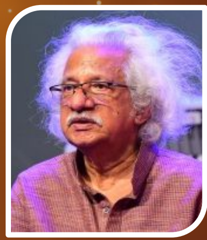
अदूर गोपालकृष्णन
2004

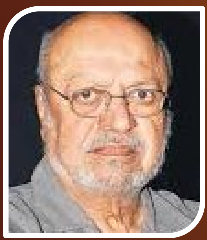
श्याम बेनेगल
2005

तपन सिन्हा
2006

मन्ना डे
2007

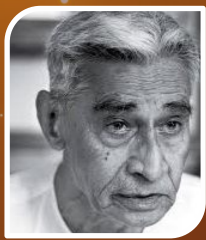
वी के मूर्ति
2008

डी रामानायडु
2009

के बालचंदर
2010

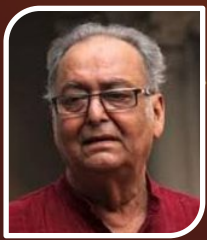
सौमित्रा चटर्जी
2011

प्राण
2012

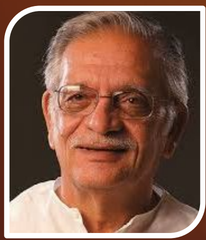
गुलज़ार
2013

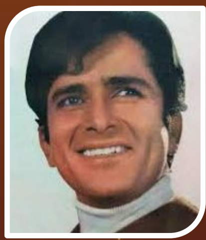
शशि कपूर
2014

मनोज कुमार
2015

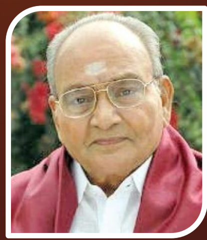
कासिनतुनि विश्वनाथ
2016

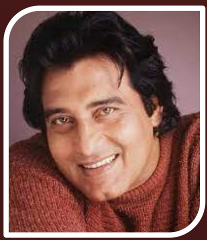
विनोद खन्ना
2017

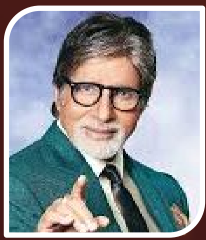
अमिताभ बच्चन
2018

रजनीकांत
2019

आशा पारेख
2020

वहीदा रहमान
2021

मिथुन चक्रवर्ती
2022